प्रथमः पाठः

अस्माकं राष्ट्रियप्रतीकानि

[सभी राष्ट्र किन्हीं विशेष वस्तुओं को अपने राष्ट्रीय प्रतीक के रूप में स्वीकार करते हैं जिनमें राष्ट्र का गौरव और उसकी चारित्रिक विशेषताएँ स्पष्ट प्रतिभासित होती हैं। हमारे राष्ट्र ने भी कुछ प्रतीक-चिह्न स्वीकार किये हैं, जिनके द्वारा हमारी भारतीय संस्कृति के चारित्रिक गुण व्यंजित होते हैं। भारत ने जो राष्ट्रीय प्रतीक निर्धारित किये हैं, वे इस प्रकार हैं–

मयूर– *पक्षियों में मोर हमारा राष्ट्रीय प्रतीक है। आकाश के काले बादलों को देखकर अपने सुन्दर पंखों को फैलाकर मोर जब नृत्य करते हैं तो वह दृश्य मन तथा आँख दोनों को आनन्दित करता है। यह मधुर स्वरवाला मयूर विष से भरे हुए साँपों को खाता है। इसी प्रकार की हमारी भारतीय संस्कृति भी है, जहाँ सभी के साथ मधुर वाणी में मधुर व्यवहार किया जाता है। परन्तु देश की अखण्डता और एकता को नष्ट करनेवाले अत्याचारियों और देशद्रोहियों को उसी प्रकार नष्ट कर दिया जाता है, जैसे मयूर विषधरों को खाकर नष्ट कर देता है।*

व्याघ्र– *पशुओं में व्याघ्र को राष्ट्रीय प्रतीक के रूप में स्वीकार किया गया है। चितकबरे व्याघ्र का पराक्रम और स्फूर्ति प्रसिद्ध है। अत्यधिक तेज दौड़नेवाले ये व्याघ्र दूर से ही पास आनेवाले संकट को पहचान लेते हैं और अपने बचाव के लिए प्रयत्नशील हो जाते हैं।*

कमल– *सरसिज, पद्म, पंकज आदि नामों से जाना जानेवाला कमल का पुष्प हमारा राष्ट्रीय प्रतीक है। उसकी कोमलता, मनोहरता, विकासशीलता और पवित्रता आदि गुणों का कवियों ने बहुतायत से वर्णन किया है। शरद् ऋतु में ये मनोहर पुष्प तालाबों में अनायास खिल उठते हैं और सूर्य की रोशनी में पूर्णरूप से विकास को प्राप्त करते हैं। कीचड़ में उत्पन्न होने पर भी इनका इतना मनोहर होना राष्ट्र के लिए यह सन्देश है कि किसी भी कुल में जन्म लेनेवाला व्यक्ति अवसर प्राप्त होने पर आगे बढ़ने की क्षमता रखता है।*

राष्ट्रगान– *सभी स्वतन्त्र राष्ट्रों का अपना एक गान होता है जिसे राष्ट्रगान कहा जाता है। सभी राष्ट्र अपने राष्ट्रगान का सम्मान करते हैं और महत्त्वपूर्ण अवसरों पर उसे गाते हैं। हमारा राष्ट्रगान विश्वकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर द्वारा लिखा गया है जो 'जन-गण-मन' इस नाम से विश्व में प्रसिद्ध है। हमारे राष्ट्रगान में विश्वकवि ने राष्ट्र की विशालता, अखण्डता और भारतीय संस्कृति का गौरवपूर्ण वर्णन किया है। सभाओं की समाप्ति पर और विद्यालयों में प्रार्थना के बाद राष्ट्रगान गाने की प्रथा है। राष्ट्रगान के समय सावधान की मुद्रा में खड़े होना आवश्यक है। इसका आरोह, अवरोह एवं उसके गाने में लगनेवाला समय सुनिश्चित है जिसमें परिवर्तन नहीं किया जा सकता। राष्ट्रगान श्रद्धा से गाया जाना चाहिए।*

राष्ट्रध्वज– *सभी राष्ट्रीय प्रतीकों में राष्ट्रध्वज का सर्वाधिक महत्त्व होता है। सभी स्वतन्त्र राष्ट्रों का अपना राष्ट्रध्वज होता है। राष्ट्रध्वज का सम्मान और उसकी रक्षा देशवासी अपने प्राणों को न्योछावर करके भी करते हैं। हमारा राष्ट्रध्वज तीन रंगों का है और विश्व में तिरंगे के नाम से प्रसिद्ध है। ध्वज के सबसे नीचे का हरा रंग सुख, समृद्धि और विकास का द्योतक है। बीच में श्वेत रंग ज्ञान, सौहार्द और शान्ति का प्रतीक है। सबसे ऊपर का केसरिया रंग त्याग और शौर्य का प्रतीक है। ध्वज के मध्य श्वेत वर्ण के बीच में अशोक का चक्र धर्म, सत्य और अहिंसा का प्रतीक है। चक्र में चौबीस तीलियाँ हैं जो चक्र के मध्य भाग में एक स्थान पर जुड़ी हुई हैं। ये प्रतीक हैं भारत और उसकी राष्ट्रीय एकता की, जहाँ अनेक भाषा, धर्म, जाति और वर्ण के लोग एक साथ मिलकर रहते हैं। सूर्य के अस्त होने पर ध्वज उतारकर सुरक्षित रख दिया जाता है। राष्ट्रीय शोक के अवसर पर ध्वज आधा झुका रहता है।*

ये राष्ट्रीय प्रतीक हमारी स्वतन्त्रता के प्रतीक हैं। सभी देशवासियों को इनका आदर करना चाहिए और प्राण न्योछावर करके भी इनकी रक्षा करनी चाहिए।]

सर्वेषु राष्ट्रेषु राष्ट्रियवैशिष्ट्ययुक्तानि वस्तूनि प्रतीकरूपेण स्वीक्रियन्ते तत्रत्यैः जनैः। तेषु प्रतीकेषु तद्राष्ट्रस्य गौरवं चारित्र्यं गुणाश्च प्रतिभासन्ते। तान्येव राष्ट्रियप्रतीकानि निगद्यन्ते।

अस्माकं राष्ट्रे भारतेऽपि कतिपयानि प्रतीकानि स्वीकृतानि सन्ति। तान्यस्माकं चारित्र्यं संस्कृतिं महत्त्वं च व्यञ्जयन्ति। पक्षिषु कतमः पशुषु कतमः पुष्पेषु कतमम् वाऽस्माकं राष्ट्रियमहिम्नः प्रातिनिध्यं विदधातीति विचार्यैव प्रतीकानि निर्धारितानि सन्ति।

मयूरः—पक्षिषु मयूरः राष्ट्रियपक्षिरूपेण स्वीकृतोऽस्ति। मयूरोऽतीव मनोहरः पक्षी वर्तते। चन्द्रकवलयसंवलितानि चित्रितानि तस्य पिच्छानि मनांसि हरन्ति। यदा गगनं श्यामलैर्मेघैराच्छन्नं भवति तदा मयूरो नृत्यति। तस्य तदानीन्तनं नर्त्तनं नयनसुखकरमपि च चेतश्चमत्कारकं भवति। मधुमधुरस्वरोऽपि मयूरो विषधरान् भुङ्क्ते। इदमेवास्माकं राष्ट्रियचारित्र्यं विद्यते। सर्वैः सह मधुरं वाच्यं, मधुरं व्यवहर्तितव्यं मधुरमाचरितव्यं किन्तु ये राष्ट्रद्रोहिणोऽत्याचारपरायणाः राष्ट्रियाखण्डतायाः राष्ट्रियैक्यस्य वा विघातकाः विषमुखाः सर्पतुल्याः मयूरेणैव राष्ट्रेण व्यापादयितव्याः।

व्याघ्रः—पशुषु व्याघ्रः भारतस्य राष्ट्रियप्रतीकम्। व्याघ्रेषु चित्रव्याघ्रः बहुवैशिष्ट्यविशिष्टो विद्यते। को न जानाति चित्रव्याघ्रस्यौजः पराक्रमं स्फूर्तिञ्च? एतज्जातीयाः व्याघ्राः अस्मद्देशस्य वनेषूपलभ्यन्ते। एतेषां शरीरे स्थूल कृष्णरेखाः भवन्ति। व्याघ्रोऽसावतीव तीव्रधावकः सततसावहितः संकटं विदूरादेव जिघ्रन् तदपनेतुं सचेष्टः स्वलक्ष्यमवाप्तुं कृतिरतः स्वसीम्नि एव पर्यटन् वन्यो जन्तुर्विश्रुतो जगति।

कमलम्— कमलं सरसिजं पद्मं पङ्कजं शतदलमित्यादिनामभिः प्रथितं पुष्पमस्माकं राष्ट्रियप्रतीकत्वेन स्वीकृतं राष्ट्रियपुष्पस्य यशो विधते। तस्य कोमलत्वं मनोहरत्वं विकासशीलत्वं पवित्रत्वञ्चाभिलक्ष्यैव कविभिः तस्य बहुशः वर्णनं कृतम्। न कश्चिन्महाकविः संस्कृतभाषायां हिन्दीभाषायां वा विद्यते येनैतस्य पुष्पस्य माहात्म्यं न गीतम्। देवानां स्तुतिप्रसङ्गे दिव्यकरचरणादीनामङ्गानां मानवहृदयस्य चोपमानीकृतं सत्सांस्कृतिकं महत्त्वं विभर्ति पुष्पमिदम्।

शरदृतौ मनोहरं पुष्पमिदं यत्र तत्र जलसंकुलेषु तडागेषु सरस्सु चानायासेनोत्पद्यते वर्धते रविकरनिकरसंसर्गात् प्रस्फुटति। पङ्के जायते पङ्कजं जलसंयोगं शरत्कालञ्चावाप्य वर्धते शोभते च तथैव कस्मिंश्चित् कुले जातः जनः सौविध्यमुपयुक्तावसरञ्च लब्ध्वा वर्धितुं क्षमत इति तत्पुष्पस्य राष्ट्रकृते सन्देशः।

राष्ट्रगानम्—सर्वेषां स्वतन्त्रदेशानां स्वकीयमेकं गानं भवति तदैव राष्ट्रगानसंज्ञयाऽवबुध्यते। प्रत्येकं राष्ट्रं स्वराष्ट्रगानस्य सम्मानं करोति। महत्स्ववसरेषु तद्गानं गीयते। यदि कश्चिदन्यराष्ट्राध्यक्षोऽस्माकं देशमागच्छति तदा तस्य सम्मानाय तस्य राष्ट्रगानमस्मद्राष्ट्रगानं च वादकैः वाद्येते। महतीनां सभानां समापने तस्य गानमावश्यकम्। विद्यालयेषु प्रार्थनानन्तरं प्रतिदिनं राष्ट्रगानं गीयते।

अस्माकं राष्ट्रगानं विश्वकविना कवीन्द्रेण रवीन्द्रेण रचितं, 'जनगणमन' इति संज्ञया विश्वस्मिन् विश्वे विश्रुतं वर्तते। अस्माकं राष्ट्रगाने भारताङ्गभूतानामनेकप्रान्तानां विन्ध्यहिमालयपर्वतयोः गङ्गायमुनाप्रभृतिनदीनाञ्चोल्लेखं कृत्वा देशस्य विशालत्वं राष्ट्रस्याखण्डत्वं संस्कृतेः गौरवञ्च विश्वकविना वर्णितम्।

राष्ट्रगानमिदं द्वापञ्चाशत्पलात्मकं भवति। तस्य गाने द्वापञ्चाशत्पलात्मकः समयोऽपेक्ष्यते। न ततोऽधिको न वा ततो न्यूनः। तस्यारोहावरोहावपि निश्चितौ। तत्र विपर्ययः कर्तुं न शक्यते। राष्ट्रगानं सदोत्थितैः जनैः सावधानमुद्रया गेयम्। राष्ट्रगानावसरेऽङ्गसञ्चालनं निषिद्धम्। चलतोऽपि कस्यचित्कर्णकुहरे गीयमानस्य राष्ट्रगानस्य ध्वनिः दूरादप्यापतति चेत्तदा तत्रैव सावधानमुद्रया तेनाविचलं स्थातव्यम्। राष्ट्रगानं श्रद्धास्पदं भवति। श्रद्धयैवेदं गेयम्।

राष्ट्रध्वजः— सर्वेषु राष्ट्रप्रतीकेषु राष्ट्रध्वजस्य सर्वाधिकं महत्त्वं वर्तते। सर्वस्य स्वतन्त्रराष्ट्रस्य स्वकीयो ध्वजो भवति। तद्देशवासिनो जनाः नराः नार्यश्च स्वराष्ट्रध्वजस्य सम्मानं प्राणपणेन रक्षन्ति।

त्रिवर्णात्मको मध्येऽशोकचक्राङ्कितोऽस्माकं राष्ट्रध्वजः 'तिरङ्गा' शब्देन विश्वे विश्रुतो विद्यते। ध्वजस्याधोभागः हरितवर्णात्मकः सुखसमृद्धिविकासानां सूचकः, मध्यभागे श्वेतवर्णः ज्ञान-सौहार्द-सदाशयादिसद्गुणानां द्योतकः, ऊर्ध्वभागे च स्थितः गैरिक वर्णः त्यागस्य शौर्यस्य च बोधकः। ध्वजस्य मध्यभागस्थितश्वेतवर्णमध्येऽवस्थितमशोकचक्रं धर्मस्य सत्यस्याहिंसायाश्च प्रत्यायकम्। चक्रे चतुःविंशतिशलाकाः पृथगपि चक्रमूले एकत्र सम्बद्धाः भारते भाषाधर्मजातिवर्णलिङ्गभेदेषु सत्स्वपि भारतमेकं राष्ट्रमिति द्योतयन्ति।

राष्ट्रध्वजो निर्धारितदीर्घविस्तारपरिमितो भवितव्यम्। एषः सदा स्वच्छोऽविकृतवर्णः तिष्ठेत्। जीर्णः शीर्णो विदीर्णो वा ध्वजो नोपयोगयोग्यः। समुच्छ्रियमाणः ध्वजोऽस्तंगते सूर्ये समवतार्य सुरक्षितः संरक्षितव्यः। राष्ट्रियशोकावसरेध्वजोऽर्धमुच्छ्रीयते।

इत्येतानि राष्ट्रियप्रतीकान्यस्माकं स्वातन्त्र्यस्य प्रत्यायकानि समादृतव्यानि तु सन्त्येव प्राणपणैः रक्षितव्यानि च।

काठिन्य निवारण

प्रतीकानि = चिह्न। **सर्वेषु** = सभी। **राष्ट्रेषु** = देशों में। **राष्ट्रियवैशिष्ट्ययुक्तानि** = राष्ट्रीय विशेषताओं से युक्त। **प्रतीकरूपेण** = प्रतीक (चिह्न) के रूप में। **प्रतिभासन्ते** = प्रकाशित होते हैं। **निगद्यन्ते** = कहे जाते हैं। **व्यञ्जयन्ति** = व्यक्त करते हैं। **कतिपयानि** = कुछ। **कतमः** = कौन-सा। **तत्रत्यैः** = वहाँ के। **प्रातिनिध्यं** = प्रतिनिधित्व करना। **विदधाति** = करता है। **अतीव** = बहुत। **चित्रितानि** = चित्रित। **पिच्छानि** = पूँछ के पंख। **आच्छन्नं** = घेरे हुए। **तदानीन्तनं** = उस समय का। **विषधरान्** = साँपों को। **भुङ्क्ते** = खा जाते हैं। **वाच्य** = व्यवहार तथा वाणी। **विघातकाः** = नष्ट करनेवाले। **व्यापादयितव्याः** = मारने योग्य हैं। **चित्रव्याघ्रः** = चितकबरा शेर। **ओजः** = स्फूर्ति (शक्ति)। **तीव्रधावकः** = तेज दौड़नेवाला। **सततसावहितः** = निरन्तर सावधान। **तदपनेतुं** = उससे बचने में, उसे दूर करने के लिए। **प्रथितं** = प्रसिद्ध। **विभर्ति** = धारण करता है। **रविकरनिकरसंसर्गात्** = सूर्य की किरणों के सम्पर्क से। **प्रस्फुटति** = विकसित होता है। **पङ्के** = कीचड़। **जलसंकुलेषु** = जल से भरे हुए। **सौविध्यम्** = सुविधा। **अवबुध्यते** = समझा जाता है। **महत्सु** = बड़े। **समापने** = समाप्त होने पर। **विश्रुत** = प्रसिद्ध। **द्वापञ्चाशत्पलात्मकः** = बावन पल (बावन सेकेण्ड)। **अपेक्ष्यते** = आवश्यक है। **विपर्ययः** = विपरीत। **सदोत्थितैः** = सदैव खड़े होकर ही। **निषिद्धं** = मना है। **त्रिवर्णात्मकः** = तिरंगा। **अधोभागः** = नीचे का भाग। **ऊर्ध्व** = ऊपर का। **प्रत्यायकम्** = ज्ञान करानेवाला। **समुच्छ्रियमाणः** = ऊपर फहराता हुआ। **अनायासेन** = बिना प्रयास के। **समवतार्य** = ठीक से उतार कर। **अर्धमुच्छ्रीयते** = आधा झुका हुआ।

अभ्यास-प्रश्न

१. निम्नलिखित अवतरणों का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए–
   (क) पक्षिषु मयूरः ..... भवति।
   (ख) व्याघ्रेषु ..... जन्तुर्विश्रुतो जगति।
   (ग) अस्माकं राष्ट्रगानं ..... वर्णितम्।
   (घ) राष्ट्रध्वजो .....अर्धमुच्छ्रीयते।
२. 'अस्माकं राष्ट्रियप्रतीकानि' पाठ का सारांश लिखिए।
३. राष्ट्रीय प्रतीक किस भाव के प्रतीक हैं?
४. राष्ट्रीय प्रतीकों में किसका सर्वाधिक महत्त्व है?
५. राष्ट्रीय प्रतीक कैसे होने चाहिए?
६. राष्ट्रध्वज के चक्र में कितनी शलाकाएँ हैं?
७. राष्ट्रीय पुष्प का नाम क्या है?
८. हमारे राष्ट्रगान की रचना किसने की थी?
९. राष्ट्रध्वज में रंगों का क्रम क्या होता है?
१०. मयूर को 'राष्ट्रीय पक्षी' का पद उसकी किस विशेषता के कारण दिया गया?
११. कमल को 'राष्ट्रीय पुष्प' का गौरव किस कारण मिला?

➨ आन्तरिक मूल्यांकन

पाठ में दिये गये राष्ट्रीय प्रतीकों की एक सूची बनाइये और चित्र चिपकायें।

●●●

द्वितीयः पाठः

आदिकविः वाल्मीकिः

[संस्कृत साहित्य के आदिकवि वाल्मीकि हैं, यह सभी विद्वान् स्वीकार करते हैं। वाल्मीकि ने भगवान् राम के आदर्श चरित को काव्यबद्ध किया है। स्कन्द पुराण और अध्यात्म रामायण के अनुसार यह अग्निशर्मा नाम के ब्राह्मण थे। पूर्वजन्मों के पाप के कारण लूटपाट ही इनकी जीविका का साधन था। मार्ग में पथिकों के धन को लूटने में यदि उनके प्राण भी लेने पड़ें तो यह हिचकते नहीं थे। एक बार उस मार्ग से एक मुनि जा रहे थे। इन्होंने उनसे जब धन की माँग की तो मुनि ने कहा कि मेरे पास तो कुछ भी नहीं है। फिर मुनि ने इनसे पूछा कि यह लूटपाट पाप है। क्या तुम्हारे परिवार के लोग इसमें तुम्हारा साथ देंगे? इन्होंने कहा यह पाप है, मैं भी जानता हूँ; लेकिन इसी धन से मैं अपने परिवार का पालन-पोषण करता हूँ। यह मुनि को वहीं पेड़ से बाँधकर अपने घर जाते हैं। इनके प्रश्न पर परिवार के लोग इन पर बहुत क्रुद्ध हुए और बोले–'हमने आपको यह पाप करने को नहीं कहा। हम क्या जानें आप क्या करते हैं और कहाँ से धन लाते हैं। हम आपके इस पाप में क्यों सहभागी बनें।' परिवार के लोगों का उत्तर सुनकर यह अत्यन्त दु:खी और आश्चर्यचकित होकर मुनि के पास लौट आये। मुनि ने इनका मन शान्त करने के लिए इन्हें 'राम नाम' जपने को कहा। परन्तु वृत्ति के अनुसार यह 'मरा' जपते हुए तपस्या करने लगे। इस प्रकार समाधि में लीन होकर बहुत वर्षों तक तपस्या करते रहे। तपस्या में लीन इनके शरीर पर दीमकों ने जगह बना ली। इनका पूरा शरीर मिट्टी से ढक गया। तब वरुण की अनवरत जलधारा से मिट्टी बह गयी और इनका शरीर प्रकट हो गया। मुनियों के अनुरोध पर इन्होंने अपनी आँखें खोलीं। दीमकों की मिट्टी के ढेर से निकलने के कारण 'वाल्मीकि' और प्रचेता के द्वारा जल-धारा से मिट्टी हटाकर बाहर निकाले जाने के कारण 'प्राचेतस' इन दो नामों से प्रसिद्ध हुए।

किसी समय वाल्मीकि ने ब्रह्मर्षि नारद से भगवान् राम का लोक-कल्याणकारी चरित्र सुना और तभी से उसे काव्यबद्ध करने की इच्छा ने इनके हृदय में जन्म लिया। एक बार महर्षि वाल्मीकि तमसा नदी के तट पर भ्रमण कर रहे थे। वहीं पर क्रौञ्च पक्षी का एक जोड़ा स्वच्छन्द विचरण कर रहा था कि एक व्याध ने नर क्रौञ्च को बाण से घायल कर दिया। रक्त में लिपटे हुए क्रौञ्च के सामने बैठी क्रौञ्ची का विलाप सुनकर वाल्मीकि का शोक काव्य के रूप में इनके मुख से निकला। इस तरह अपनी पीड़ा के व्यक्त करने पर वाल्मीकि आश्चर्यचकित हो गये। उसी समय ब्रह्मा ने आकर कहा कि ''अब आप विचार न करें। सरस्वती माँ का आपकी वाणी में निवास है। आपने नारद मुनि से जो रामकथा सुनी है, उसे काव्य रूप में वर्णित करें। मेरी कृपा से आप सम्पूर्ण रामचरित से अवगत हो जायँगे। जब तक पृथ्वी पर पर्वत एवं समुद्र स्थित रहेंगे, तब तक यह रामकथा प्रचलित रहेगी।'' तब योगशक्ति के द्वारा सम्पूर्ण रामचरित को जानकर वाल्मीकि ने गङ्गा व तमसा के मध्य तट पर बैठकर सात काण्ड वाली 'रामायण' महाकाव्य की रचना की। इस प्रकार महामुनि ब्रह्मर्षि वाल्मीकि आदिकवि के नाम से संसार में विख्यात हुए।]

संस्कृतवाङ्मयस्यादिकविः महामुनिः वाल्मीकिरिति सर्वैः विद्वद्भिः स्वीक्रियते। महामुनिना रम्यारामायणी-कथा स्वरचिते काव्यग्रन्थे निबद्धा। भगवतो रामस्य चरितमस्माकं देशस्य संस्कृतेश्च प्राणभूतं तिष्ठति। वस्तुतस्तु, महामुनेः वाल्मीकेरेवैतन्माहात्म्यमस्ति यत्तेन रामस्य लोककल्याणकारकं रम्यमादर्शभूतं रूपं जनानां समक्षमुपस्थापितम्। वयं च तेन रामं ज्ञातुं क्षमा अभूम।

स्कन्दपुराणाध्यात्मरामायणयोरनुसारात् अयं ब्राह्मणजातीयः अग्निशर्माभिधश्चासीत्। पूर्वजन्मनः विपाकात्

परधनलुण्ठनमेवास्य कर्माभूत्। वनान्तरे पथिकानां धनलुण्ठनमेव तस्य जीविकासाधनमासीत्। लुण्ठनव्यापारे संशयश्चेत् प्राणघातेऽपि स संकोचं नाऽकरोत्। इत्थं हिंसाकर्मणि लिप्तः एकदा वनपथे पथिकमाकुलतया प्रतीक्षमाणोऽसौ मुनिवरमेकमागच्छन्तमपश्यत्, दृष्ट्वा च हर्षेण प्रफुल्लो जातः। समीपमागते मुनिवरे रक्ते अक्षिणी भ्रामयन् भीमेन रवेण तमवोचत् यत्किञ्चित्तवास्ति तत्सर्वं मह्यं देहि नो चेत्तव प्राणसंशयो भविष्यति। मुनिना प्रत्युक्तं, लुण्ठक! मत्पाश्वें तु किञ्चिदपि नास्ति, परं त्वां पृच्छामि किं करोषि लुण्ठितेन धनेन? इदं पापकर्म किमिति न जानासि? जानामि, तथापि करोमि। लुण्ठितेन धनेन परिवारजनस्य पोषणरूपं महत्कार्यं करोमीति तेनोक्तम्। मुनिः पुनरपृच्छत्– पापकर्मणार्जितेन वित्तेन पोषितास्तव परिवारसदस्याः किं तव पापकर्मण्यपि सहभागिनः स्युरिति। सोऽवोचत् वक्तुं न शक्नोमि परं तान् पृष्ट्वा वदिष्यामि। त्वं तावदत्रैव विरम यावदहं तान् संपृच्छ्यागच्छामि। इत्युक्त्वा तं मुनिवरं रज्जुभिः दृढं बद्ध्वा स्वकुटुम्बिनः प्रष्टुं जगाम।

अथ तस्य कुटुम्बिनः तस्य प्रश्नं श्रुत्वा भृशं चुकुपुरूचुश्च 'कथं वयं तव पापकर्मणि सहभागिनो भवेम? वयं किं जानीमहे त्वं किं करोषि कया वा रीत्या धनार्जनं विदधासि? नास्माभिः त्वं पापकर्म कर्तुमादिष्टः।'

तेषां स्वपरिवारजनानामुत्तरमाकर्ण्य सोऽतीव विषण्णोऽभवत्। द्रुतं मुनिवरमुपगम्य सर्वं च तत्परिवारजनाख्यातमसावभाषत। परं निर्विण्णं तं मुनिः तस्य हृदयशोकशमनाय 'राम' इति जप्तुमुपादिशत्। 'राम' इति समुच्चारणेऽक्षमः स्ववृत्त्यनुसारं 'मरा' इत्येव जप्तुमारभत। इत्थमसौ बहुवर्षाणि यावत् समाधौ लीनः तीव्रं तपश्चचार। तपसि रतस्य तस्य शरीरं वल्मीकमृत्तिकाभिः आवृत्तं जातम्। अथ कदाचित् प्रचेतसा निरन्तरजलधारया तस्य शरीरात् वल्मीकमृत्तिकाः परिस्राविता अभवन्। मृत्तिकाभिः तिरोहितं तस्य शरीरं पुनः प्रकटितम्। ततो मुनिभिः स संस्तुतोऽभ्यर्थितश्च चक्षुषी उन्मील्योदतिष्ठत्। वल्मीकात् प्रोद्भूतत्वाद् वाल्मीकिरिति, प्रचेतसा जलधारया मृत्तिकायाः परिस्रुतत्वाद् प्राचेतस इति तस्य नामद्वयं जातम्। रामायणे मुनिना स्वपितुः नाम प्रचेताः तस्य दशमः पुत्रोऽहमित्थमुल्लिलेख। यथा च—

''प्रचेतसोऽहं दशमः पुत्रो राघवनन्दन'' **(उत्तरकाण्ड)**

अथ कदाचित् स ब्रह्मर्षेः नारदात् भगवतो रामस्य लोककल्याणकरं वृत्तं शुश्राव। तदाप्रभृत्येव रामचरितं काव्यबद्धं कर्तुमाकाङ्क्षते स्म। अथैकदा महर्षिः माध्यन्दिनसवनाय प्रयागमण्डलान्तर्गतां तमसानदीं गच्छन्नासीत्। तत्र वनश्रियं निरीक्षमाणो महामुनिः स्वच्छन्दं विचरन्तं क्रौञ्चमिथुनमेकमपश्यत्। पश्यत एव तस्य कश्चित् पापनिश्चयो व्याधः तस्मान्मिथुनादेकं बाणेनः विजघान। बाणेन विद्धं महीतले लुण्ठन्तं शोणितपरीताङ्गं तं विलोक्य क्रौञ्ची करुणया गिरा रुराव। क्रौञ्च्याः करुणारवं श्रावं श्रावं मुनिहृदयालीनः शोकानलपरिद्रुतः करुणरसः श्लोकच्छलाद् हृदयादेवं निर्गतोऽभवत्–

''मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।
यत्क्रौञ्चमिथुनादेकमवधीः काममोहितम् ।।''

श्लोकोऽयमाम्नायादन्यत्र छन्दसां नूतनोऽवतार आसीत्। एवं ब्रुवतस्तस्य हृदि महती चिन्ता बभूव– अहो! शकुनिशोकपीडितेन मया किमिदं व्याहृतम्। अत्रान्तरे वेदमूर्तिश्चतुर्मुखो भगवान् ब्रह्मा महामुनिमुपगम्य सस्मितमुवाच– महामुने, आपन्नानुकम्पनं हि महतां सहजो धर्मः। श्लोकं ब्रुवता त्वया त्वेष एव धर्मः पालितः। तन्नात्र विचारणा कार्या। सरस्वती मच्छन्दादेव त्वयि प्रवृत्ता। साम्प्रतं यथा नारदाच्छ्रुतं तथा त्वं श्रीमद्भगवतो रामचन्द्रस्य कृत्स्नं चरितं वर्णय। मत्प्रसादात् निखिलं च रामचरितं तव विदितं भविष्यति। किं बहुना, यावन्महीतले गिरिसरित्समुद्राः स्थास्यन्ति तावल्लोके रामायणकथा प्रचलिष्यतीत्यादिश्य भगवानब्जयोनिरन्तर्हितोऽभवत्। ततो योगबलेन नारदोक्तं समग्रं रामचरितमधिगम्य गङ्गातमसयोरन्तराले तटे; सप्तकाण्डात्मकं रामायणाख्यमादिमहाकाव्यं रचयामास, तदनन्तरं मुनेः विश्रमार्थं द्वौ अपराश्रमौ अभूताम्। एकश्चित्रकूटे अपरश्च कानपुरमण्डलान्तर्गत ब्रह्मावर्त्तान्तः, आधुनिके बिठूरनाम्नि स्थाने आसीत् अत्रैव लवकुशयोः जनुरभूत्। एवमादिकविर्यशसा ख्यातोऽभवल्लोके महामुनिः ब्रह्मर्षिः।

काठिन्य निवारण

वाङ्मयस्य = साहित्य के। **आदिकविः** = प्रथम कवि। **लोककल्याणकारकं** = संसार के लिए कल्याणकारी। **निबद्धा** = लिखा है। **प्राणभूतं** = जीवनाधार। **क्षमा** = समर्थ। **विपाकात्** फलस्वरूप। **लुण्ठनं** = लूटना। **प्राणघातेऽपि** = प्राण ले लेने में भी। **पथिकमाकुलतया** = पथिक की व्याकुलता से। **प्रतीक्षमाणोऽपि** = प्रतीक्षा करते हुए भी। **भीमेन रवेण** = भयंकर आवाज से। **विरम** = ठहरो। **प्रष्टुम्** = पूछने के लिए। **भृशं** = बहुत। **चुकुपुः** = क्रोधित हुए। **ऊचुः** = बोले। **विषण्णः** = दुःखी। **द्रुतं** = शीघ्र। **परं** = अत्यन्त। **निर्विण्णं** = खिन्न (दुःखी)। **शमनाय** = शान्त करने के लिए। **वृत्त्युनुसारम्** = जीविका के अनुसार। **इत्थम्** = इस प्रकार। **वल्मीक मृत्तिकाभिः** = दीमक की मिट्टी से। **आवृत्तं** = ढक गया। **प्रचेतसा** = वरुण। **परिस्राविता** = बहा दी गयी। **तिरोहितं** = छिपा हुआ। **अभ्यर्थितः** = प्रार्थना की गयी। **प्रोद्भूतत्वाद्** = उत्पन्न होने के कारण। **जातम्** = हुए। **विजघान** = मार डाला। **मिथुन** = जोड़ा। **शाश्वतीःसमाः** = बहुत वर्षों तक। **प्रतिष्ठां** = कीर्ति को। **आम्नायादन्यत्र** = वेद से भिन्न। **व्याहृतम्** = कह दिया। **जनुः** = जन्म। **शुश्राव** = सुना। **तदाप्रभृति** = तब से लेकर। **आकाङ्क्षते स्म** = इच्छा करते थे। **श्लोकच्छलाद्** = श्लोक के बहाने। **ब्रुवतः** = बोलते हुए। **साम्प्रतं** = इस समय। **भवलोके** = संसार में।

अभ्यास-प्रश्न

१. निम्नलिखित अवतरणों का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए–
   (क) संस्कृतवाङ्मयस्यादिकविः ..... क्षमा अभूम।
   (ख) स्कन्दपुराणाध्यात्म ..... प्रफुल्लो जातः।
   (ग) अथैकदा महर्षिः ..... काममोहितम्।
   (घ) सरस्वती मच्छन्दादेव .....जनुरभूत्।
२. 'आदिकविः वाल्मीकिः' पाठ का सारांश लिखिए।
३. आदिकवि के नाम से कौन प्रसिद्ध है?
४. वाल्मीकि किस नदी के तट पर भ्रमण कर रहे थे?
५. वाल्मीकि का प्रारम्भिक नाम क्या था?
६. प्राचेतस किसका नाम था?
७. रामायण के रचयिता कौन थे?
८. व्याध ने किस पक्षी को मारा था?
९. वाल्मीकि को आदिकवि क्यों कहा जाता है?
१०. वाल्मीकि का प्रारम्भिक जीवन कैसा था? अपने शब्दों में वर्णन कीजिए।
११. कवि के मुख से 'मा निषाद प्रतिष्ठां.....' श्लोक कब और क्यों निकल पड़ा था?
१२. वाल्मीकि-कृत रामकथा का वास्तविक नाम क्या है?

➨ आन्तरिक मूल्यांकन

वाल्मीकि जी के समकक्ष आप संस्कृत के किन विद्वानों को मानते हैं? तर्क सहित उत्तर लिखिए।

●●●

तृतीयः पाठः

बन्धुत्वस्य सन्देष्टा रविदासः

[कहा जाता है कि परमोपासक रामानन्द के बारह शिष्यों में रविदास नाम के एक शिष्य थे, जो संसार में 'रैदास' के नाम से प्रसिद्ध हुए। इनका जन्म वाराणसी के मडुवाडीह ग्राम में विक्रम संवत् १४७१ में माघमास की पूर्णिमा के दिन हुआ था। रविवार के दिन जन्म होने के कारण इन्हें रविदास नाम दिया गया। पन्द्रहवीं शताब्दी में भारतीय जीवन अत्यन्त कष्टपूर्ण व कठिनता से भरा हुआ था। मुस्लिम शासकों के आक्रमण और मिथ्या कलह से भारतीय राजागण दुःख और दीनता से ग्रसित थे। सभी ओर से उपेक्षित भारतीय जनता, विभिन्न धर्मानुयायियों में प्रचलित विद्वेष, जाति और वर्ण के भेद से विभक्त भारतीय समाज की दुर्दशा को देखकर दुःखित हृदयवाले सन्त व महात्मा ईश्वर की शरण को ही एकमात्र उपाय मान रहे थे। वे लोग ईश्वर के प्रति समर्पण, परमात्मा की सर्वशक्तिमत्ता और व्यापकता का प्रचार-प्रसार कर रहे थे। ऐसे समय में सन्त रविदास ने धर्म के बाह्य आचरण को ही परस्पर वैर का कारण बताते हुए भाईचारे का सन्देश दिया। उन्होंने तन की शुद्धि की अपेक्षा मन की शुद्धि को आवश्यक माना। उनका कहना था कि यदि मन पवित्र हो तो सामने काठ की थाली में रखा साधारण जल भी गंगा जल के समान होता है। सन्त रविदास ने पाठशाला में शिक्षा प्राप्त नहीं की थी तथापि गुरु की कृपा से संसार की नश्वरता और परमात्मा की अनश्वरता व व्यापकता का ज्ञान प्राप्त किया। गुरु की प्रेरणा से यही सन्देश जन-जन को दिया। उनका विश्वास था कि फल की इच्छा किये बिना अपने कर्म को करते हुए घर में भी परमात्मा से साक्षात्कार किया जा सकता है। तपस्या के लिए गहन वन या कन्दराओं में जाने की आवश्यकता नहीं। कबीर और नानक की भाँति रविदास भी निर्गुण ब्रह्म के उपासक थे, परन्तु सगुण भक्ति के प्रति किसी प्रकार का वैरभाव न था। उनकी दृष्टि में परमात्मा ने सबको समान बनाया है। अतः इन्होंने छुआछूत, ऊँच-नीच का विरोध किया। उन्होंने दीन-दलितों और निर्धनों की सेवा में ही ईश्वर के दर्शन किये। देश की अखण्डता और राष्ट्रीय एकता की रक्षा करते हुए सन्त रविदास ने विक्रम संवत् १५९७ में राजस्थान के चित्तौड़गढ़ नामक स्थान पर १२६ वर्ष की आयु में देह-त्याग किया। परन्तु उनका यशरूपी शरीर आज तक जीवित है।]

परमोपासकस्य रामानन्दस्य द्वादशशिष्या आसन्निति भण्यते। तेषु शिष्येषु रविदासो लोके रैदास इति संज्ञया ख्यात एकः शिष्यः आसीदित्युच्यते। रविदासस्य जन्म काश्यां माण्डुरनाम्नि (मडुवाडीह) ग्रामे एकसप्तत्युत्तरचतुर्दशशततमे (१४७१ वि०) विक्रमाब्दे माघमासस्य पूर्णिमायान्तिथौ रविवासरेऽभवत्। रविवासरे तस्य जन्म इति हेतोः रविदास इति नाम जातमित्यनुमीयते।

पञ्चदश्यां शताब्दौ भारतीयजनजीवनमतीवक्लेशक्लिष्टमासीत्। यवनशासकैराक्रान्तो देशो, मिथः कलहायमानां भारतीयाः राजानः दुःखदैन्यग्रस्ताः, सर्वथोपेक्षिताः भारतीयजनाः विविधधर्मानुयायिषु प्रवृत्तो विद्वेषः जातिवर्णेषु विभक्तो भारतीयसमाज इति देशदशां दर्शं दर्शं दूयमानहृदयाः तदानीन्तनाः महात्मानः सन्तश्चेश्वरमेव शरणमिति मन्यमाना ईश्वरम्प्रति समर्पिताः सन्तः परमात्मनो व्यापकत्वं तस्य सर्वशक्तिमत्वञ्च बोधयन्ति स्म।

वस्तुतस्तु, तादृशा एव महापुरुषाः 'सन्त' शब्देन भारतीयजनमानसे समादृता अभवन्। ये परदुःखकातराः परहितरताः दुःखिजनसेवापरायणाः दलितान् शोषितान्प्रति सदयाः स्वसुखमविगणयन्तः यदृच्छालाभसन्तुष्टा आसन्।

सत्पुरुषो महात्मा रविदासः स्वकर्मणि निरतः सन् परमात्मनो माहात्म्यमुपवर्णयन् दुःखितान् जनान्प्रति सदयहृदयः कर्मणः प्रतिष्ठां लोकेऽस्थापयत्। धर्मस्य बाह्याचारः एव परस्परवैरस्य हेतुरिति सः विश्वसिति स्म। अतो बाह्याचारान् परिहाय धर्माचरणं

विधेयम्। गङ्गास्नानाच्छरीरशुद्धेरपेक्षया मनसः शुद्धिरावश्यकीति तेनोक्तम्। पूते तु मनसि काष्ठस्थाल्यामेव गङ्गेति तस्योक्तिः प्रसिद्धैवास्ति।

रविदासः कस्याञ्चिदपि पाठशालायां पठितुं न गतोऽतस्तस्य ज्ञानं पुस्तकीयं नासीत्। जगतो नश्वरत्वं परमात्मनोऽनश्वरत्वं व्यापकत्वमित्यादिदार्शनिकं ज्ञानं गुरोरनुकम्पया तेन लब्धं प्रेरणयैव तथाभूतस्य ज्ञानस्योपदेशो जनेभ्यस्तेन दत्तः।

सः तपस्तप्तुं गहनं वनं न जगाम न वा गिरिगुहायामुपविश्य साधनरतः ज्ञानमधिगन्तुं चेष्टते स्म। वीतरागभयक्रोधोऽसौ जगति निवसन्नपि जगतः बन्धनात् पद्मपत्रमिव मुक्तः व्यवहरति स्म। स्वकर्मणि निरतः फलम्प्रति निराकाङ्क्षः स्वगृहेऽपि परमात्मानं साक्षात्कर्तुं शक्यत इति रविदासः प्रत्येति। अतो विभिन्नोपासनास्थलेषु वनेषु रहसि वा ईश्वरानुसन्धानादपेक्षया स्वहृदये एवानुसन्धातुमुचितम्। ईश्वरप्राप्तावहङ्कार एव बाधकोऽस्ति। 'अहमिदं करोमि' ममेदमिति बोधः भ्रमात्मकः। भ्रममपहायैव ईश्वरप्राप्तिः सम्भवा। रविदासः स्वरचिते पद्ये गायति–यदा अहमस्मि तदा त्वं नासि, यदा त्वमसि तदा अहं नास्मि।

रविदासः कबीरदासो नानकदेवप्रभृतयः सन्तो महात्मानः निर्गुणमेवेश्वरं गायन्ति स्म। परन्ते सगुणसम्प्रदायावलम्बिनः प्रति विद्वेषिणो नासन्। तैः रचितेषु पदेषु यत्र-तत्र भक्तिभावस्य तत्त्वमवलोक्यते।

निराकारब्रह्मणः गहनभूते सुविस्तृते साक्षात्कारविचारनभसि विचरन्नपि रविदासः पृथ्वीतले विद्यमानेषु दुःखितेषु, दरिद्रेषु दलितेषु च सुतरां रमते स्म। स दलितेषु, दीनेषु, दरिद्रेष्वेवेश्वरमपश्यत्। तेषां सेवा, तान्प्रति सहानुभूतिः प्रेमप्रदर्शनं चेश्वरार्चनमिति तस्य विचारः। सामाजिकवैषम्यं न वास्तविकं प्रत्युत परमात्मना सर्वे समाना एव रचिताः, सर्वे च तस्येश्वरस्य सन्ततयोऽतः परस्परं बान्धवाः। मनुष्येषु तर्हि मिथः कथं वैरभावः ? इत्थं समत्वस्य बन्धुतायाश्चोपदेशं जनेभ्योऽददात्। जातिवर्णसम्प्रदायादिभेदा अपि मनुष्यरचिता परमात्मन इच्छाप्रतिकूलम्। इत्थं रविदासेन मनुष्यजातौ स्पृश्यास्पृश्यादिदोषाणामुच्चावचभेदानां चातीवतीव्रस्वरेण विरोधः कृतः। हरिं भजति स हरेर्भवति। हरिभजने न कश्चित्पृच्छति जातिं वर्णं वेति सत्यं प्रतिपादयन् देशस्याखण्डतायाः राष्ट्रस्यैक्यस्य च रक्षणे स प्रयातत्। महात्मा रविदासोऽध्यात्म, भक्तिं, सामाजिकाभ्युन्नतिं युगपदेव संसाधयन् सप्तनवत्युत्तरपञ्चदशशततमेविक्रमे राजस्थानप्रान्ते चित्तौड़गढनाम्नि स्थाने षड्विंशत्युत्तरशतमिते वयसि परमात्मनि विलीनः यशःशरीरेणाद्यापि जीवतितराम्।

काठिन्य निवारण

परमोपासकस्य = महान् उपासक। **भण्यते** = कहा जाता है। **संज्ञया** = नाम से। **ख्यातः** = प्रसिद्ध। **इत्यनुमीयते** = ऐसा अनुमान लगाया जाता है। **रविवासरे जातः** = रविवार को पैदा होने के कारण। **दूयमान** = दुःखी। **तादृशा** = वैसे ही। **समादृता** = सम्मानित। **परिहाय** = छोड़कर। **पूते** = पवित्र। **काष्ठस्थाल्यामेव** = कठौती में ही। **नश्वरत्वं** = नाशवान्। **लब्धं** = प्राप्त किया। **गहन** = घने। **गुहायाम्** = गुफा में। **प्रत्येति** = विश्वास करते थे। **विद्वेषिण** = शत्रु। **तान्प्रति** = उनके लिए। **युगपदेव** = एक साथ ही। **वयसि** = आयु में। **इत्थं** = इस प्रकार। **दर्शं दर्शं** = देख-देखकर। **निरतः** = जुटे रहना। **सुतरां** = अत्यन्त। **नासि** = नहीं हो। **अपहाय** = दूर करके। **निराकाङ्क्षः** = इच्छारहित। **रहसि** = एकान्त में। **उच्चावचभेदानाम्** = ऊँच-नीच के भेदों का।

अभ्यास-प्रश्न

१. निम्नलिखित अवतरणों का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए–

(क) यवनशासकैः .....बोधयन्ति स्म।

(ख) रविदासः .....रमते स्म।

(ग) हरिभजने .....जीवतितराम्।

२. प्रस्तुत पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

३. किसने कहा था कि काठ की थाली का साधारण जल गङ्गा-जल के समान होता है?

४. रविदास किसके शिष्य थे?

५. रविदास का जन्म किस दिन हुआ था?

६. रविदास के जन्म के समय भारत में किसका शासन था?

७. रविदास की मृत्यु कहाँ हुई?

८. रविदास किस ब्रह्म के उपासक थे?

९. निम्नांकित शब्दों का सन्धि-विच्छेद कीजिए–

परमोपासकस्य, सर्वथोपेक्षिताः, महात्मनः, देशस्याखण्डतायाः, आसीदित्युच्यते।

१०. निम्नलिखित शब्दों की सहायता से संस्कृत में वाक्य बनाइए–

तेषु, लोके, नासीत्, वनेषु, यदा, करोमि।

➨ आन्तरिक मूल्यांकन

१. रामानन्द के मुख्य शिष्यों के नाम बताइए।

२. रविदास जी का मानना था कि 'मन चंगा तो कठौती में गंगा'। इस विषय पर आप अपना मत प्रस्तुत कीजिए।

●●●

चतुर्थः पाठः

आजादः चन्द्रशेखरः

[राष्ट्रहित के लिए सहर्ष अपने प्राणों की बलि देनेवालों में अग्रगण्य चन्द्रशेखर भारत की स्वतन्त्रता के इतिहास में सदा ही उल्लेखनीय एवं स्मरणीय रहेंगे। स्वतन्त्रता रूपी वृक्ष को लगानेवाले प्रातःस्मरणीय वीर हम भारतीयों के द्वारा कभी भी भुलाये नहीं जा सकते। उन्हीं वीरों में मूर्धन्य परमस्वतन्त्र चन्द्रशेखर आजीवन स्वतन्त्र ही रहे। लगातार प्रयत्न करते रहने पर भी अंग्रेज शासक उन्हें लौह शृंखला में नहीं बाँध पाये। चन्द्रशेखर आजाद का जन्म १९०६ ई० में जुलाई महीने की २३ तारीख को मध्य प्रदेश के भाँवरा ग्राम में हुआ। उनके पिता श्री सीताराम अपनी धर्मपत्नी जगरानी के साथ उन्नाव जनपद के बदरका गाँव से आकर यहाँ निवास कर रहे थे। चन्द्रशेखर के पिता का मासिक वेतन आठ रुपये था।

एक बार चन्द्रशेखर ने पिता से पूछे बिना बगीचे से एक फल तोड़ लिया, जिस पर क्रोधित होकर सीताराम ने अपने प्रिय पुत्र को ग्यारह वर्ष की अवस्था में ही घर से निकाल दिया, क्योंकि पिता के कहने पर भी उन्होंने माली से क्षमा नहीं माँगी। घर से निकलकर वह दो वर्षों तक इधर-उधर भटकते रहे। अन्त में सौभाग्य से किसी प्रकार वाराणसी पहुँचे और वहाँ एक संस्कृत पाठशाला में अध्ययन किया। एक बार एक दुष्ट युवक को एक स्त्री के साथ अभद्र व्यवहार करने के लिए बलपूर्वक पकड़कर तब तक मारा जब तक उस युवक ने महिला को बहन नहीं कहा। इस घटना से प्रसिद्ध हुए चन्द्रशेखर से प्रभावित होकर आचार्य नरेन्द्रदेव ने काशीविद्यापीठ में उनके पढ़ने की व्यवस्था करा दी। जब विद्यापीठ के छात्र असहयोग आन्दोलन में सम्मिलित हुए, तब उनके साथ ही आजाद भी हाथों में तिरंगा लेकर स्वतन्त्रता-आन्दोलन में सक्रिय हो गये। अंग्रेज शासकों द्वारा गिरफ्तार करके जब न्यायाधीश के सम्मुख लाये गये तो अपना नाम आजाद, पिता का नाम स्वाधीन और कारागार को ही अपना घर बताया। इस कारण उन्हें कोड़ों की मार खानी पड़ी। तभी उन्होंने जयजयकार करते हुए ब्रिटिश साम्राज्य को समूल नष्ट करने का मन में संकल्प लिया। प्रणवेश चटर्जी और मन्मथनाथ गुप्त ने उनकी निष्ठा देखकर उन्हें क्रान्तिकारी दल का सदस्य बना दिया। उस समय दल के नेता रामप्रसाद बिस्मिल थे। कुछ ही समय में आजाद केन्द्रीय क्रान्तिकारी दल के सदस्य बना दिये गये। गोली का अचूक निशाना लगानेवाले आजाद ने १९२५ में ९ अगस्त को हुए काकोरी काण्ड में सक्रिय भाग लिया। १९२९ में अप्रैल महीने की आठ तारीख को आजाद के परामर्श से ही सरदार भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त ने विधानसभा भवन में बम विस्फोट किया। कानपुर नगर के वीरभद्र त्रिपाठी ने विश्वासघात किया जो आजाद के लिए बहुत अनिष्टकारी सिद्ध हुआ। सन् १९३१ में फरवरी मास की २७ तारीख को प्रातः नौ बजे आजाद प्रयाग के अल्फ्रेड नामक उद्यान में पेड़ के नीचे यशपाल और सुखदेव से बातें करते हुए बैठे थे। आजाद सुखदेव के साथ बात कर ही रहे थे तभी जाते हुए वीरभद्र को देखकर यशपाल भी उठकर चले गये। तभी आरक्षकों ने आकर चारों ओर से उन्हें घेर लिया। अपने साथी को किसी प्रकार उद्यान से बाहर निकालकर आजाद ने पिस्तौल निकाल ली। जब उनकी पिस्तौल में केवल एक गोली ही बची तो उन्होंने स्वयं को मार लिया। इस प्रकार आजाद का शरीर तो चला गया, परन्तु यश रूपी शरीर से वह सदा जीवित रहेंगे। ऐसे देशभक्त सदा जन्म नहीं

लेते। वह भारतभूमि धन्य है जहाँ ऐसे आत्मबलिदानी ने जन्म लेकर उसे अपने रक्त से सींचा। स्वतन्त्रता प्राप्त करने का इच्छुक, क्रान्तिकारी, दृढ़निश्चयवाला यह चन्द्रशेखर आजाद आत्म-बलिदान करने के कारण अमर हो गया।]

राष्ट्रहितेऽनुरक्तानामात्मबलिं कर्तुम् सहर्षमुद्यतानाम् अग्रगण्यः चन्द्रशेखरः भारतस्य स्वातन्त्र्येतिहासेऽसौ सततमुल्लेखनीयः स्मरणीयश्च। स्वतन्त्रतायाः मधुरं फलं भुञ्जानाः वयमधुना प्रकामं मोदामहे। तद् वृक्षारोपकास्तु तं एवात्मबलिदायकास्तादृशाः वीराः एवासन्। प्रातः स्मरणीयास्ते वीराः कदापि भारतीयैरस्माभिः नैव विस्मर्तुं शक्यन्ते। तेषां विस्मृतिस्तु महती कृतघ्नता स्यात्। तेष्वेव वीरेषु मूर्धन्यः परमस्वतन्त्रश्चन्द्रशेखरः आजीवनं स्वतन्त्र एवासीत्। सततं प्रयतमानैरपि आरक्षकैः तत्करे लौहशृंखला न पिनद्धा। मातृभूमिपरिचारकः राणाप्रताप इव असावपि आत्मबलिदायको वीरः रक्तस्नातोऽपि स्वतन्त्र एव परिभ्रमन् प्राणानत्यजत्। जीवितः स तैः कथमपि न गृहीतः। देशभक्तानामादर्शभूतस्य चन्द्रशेखरस्य जन्म षडधिकैकोनविंशतिशततमे (१९०६) खिष्टाब्दे जुलाईमासस्य त्रयोविंशतितमायां तारिकायां मध्यप्रदेशस्य भाँवरा ग्रामेऽभवत्। तस्य जनकः श्री सीतारामः स्वीयया धर्मपत्न्या जगरानी नामधेयया सह उन्नावजनपदस्य बदरकाग्रामात् गत्वा तत्रैव न्यवसत्। सः तत्र 'अल्लीराजपुरराज्ये' वृत्यर्थं कार्यमकार्षीत्। अष्टमुद्रात्मकं मासिकं वेतनञ्चालभत।

एकदा चन्द्रशेखरः तस्यैवोद्यानस्य फलमेकं पितरमपृष्ट्वैव अत्रोटयत्। क्रोधाविष्टस्तज्जनकः सीतारामः प्रियं सुतमेकादशवर्षदेशीयं चन्द्रशेखरं गृहान्निस्सारयामास। क्रोधाविष्टः जनकः अवोचत्, गत्वा मालाकारं क्षमां याचस्व, परं स एवं कर्तुं नोद्यतः। गृहान्निर्गत्य वर्षद्वयमितस्ततः सः प्रतिनगरं भ्रामं-भ्रामं घोरं श्रमं कृत्वा जीविकां निरवहत्। दैववशात् सः बालकः वाराणसीमुपगम्य कस्याञ्चित् संस्कृतपाठशालायाम् संस्कृताध्ययनमकरोत्।

एकदा कोऽपि दुष्टो युवा कामप्येकां भद्रयुवतीं पीडयन् चन्द्रशेखरेण बलात् गृहीतः। तं धराशायिनं कृत्वा तस्योरसि उपविष्टश्च, चन्द्रशेखरः तं तावन्नमुमोच यावत् सः चञ्चलो दुष्टः धृष्टः निर्लज्जो युवा तां युवतिं भगिनिकेति नाकथयत् क्षमायाच्ञाञ्च नाकरोत्। अनया घटनया चन्द्रशेखरस्य महती ख्यातिः जाता। आचार्यनरेन्द्रदेवस्तेन प्रभावितः काशीविद्यापीठे तस्याध्ययनव्यवस्थां कृतवान्। यदा विद्यापीठस्यानेके छात्राः असहयोगान्दोलने सम्मिलिताः जाताः तदाजादोऽपि तत्र सम्मिलितः त्रिवर्णं ध्वजमादाय 'जयतु महात्मा गान्धी', 'जयतु भारतमाता' इति घोषयन् न्यायाधीशस्य सम्मुखमानीतः। तदा स स्वकीयं नाम 'आजाद' इति पितृर्नाम 'स्वाधीन' इति गृहञ्च कारागारमवोचत्, तदा क्रुद्धो न्यायाधीशः तस्मै पञ्चदशकशाघातदण्डमददात्। तदापि सः 'जयजय' कारं कृत्वा मनसि ब्रिटिशसाम्राज्यमुन्मूलयितुं संकल्पमकरोत्। कशाघातेन पीड्यमानोऽपि सः निश्चल एवासीत्। ततः बहिरागत्य सः जनैरभिनन्दितः द्वाविंशत्यधिकैकोनविंशतिशततमे (१९२२) वर्षे यदा महात्मना गान्धिमहोदयेनान्दोलनम् निवारितं तदाजादो दुःखितो जातः यतोऽहिंस्रकान्दोलने तस्य निष्ठा नासीत्।

दैवादाजादस्य परिचयः क्रान्तिकारिणा प्रणवेशचटर्जीमहोदयेन सह संजातः। अनेन प्रसिद्धक्रान्तिकारिणा मन्मथनाथगुप्तेन साकं तस्य परिचयः कारितः। आजादस्य सत्यनिष्ठामवलोक्य मन्मथनाथगुप्तः क्रान्तिकारिदलस्य सदस्यं तमकरोत्। तदानीं क्रान्तिकारिदलस्य नेता अमरबलिदायी रामप्रसादविस्मिलः आसीत्। अल्पीयसैव समयेन आजादः केन्द्रियक्रान्तिकारिदलस्य सदस्यो जातः। गुलिकाचालने लक्ष्यभेदने च तेन महत् कौशलमवाप्तम्। अतः सः तस्मिन् दले अतीव समादृतः आसीत्। पञ्चविंशत्यधिकैकोनविंशतिशततमे (१९२५) वर्षे अगस्तमासस्य नवम्यां तारिकायां जायमाने काकोरीकाण्डे आजादेन सक्रियभागो गृहीतः। तस्मिन्नवसरे आजादं विहाय अन्ये बहवः सहयोगिनः निगडिताः शूलमारोपिताश्च। तदानीं परमदुःखितोऽपि आजादः क्रान्तेर्विरतो न जातः, प्रत्युत क्रान्तिकारिसेनायाः नायको जातः।

तेनानेकानि कार्याणि कृतानि, अनेकेऽधिकारिण: आरक्षिणश्च हता:। लालालाजपतरायस्य हन्ता आरक्षिप्रधान: 'साण्डर्स' नामधेयोऽपि आजादेन निहत:।

एकोनत्रिंशदधिकैकोनविंशतिशततमे (१९२९) वर्षे अप्रैलमासस्य अष्टम्यां तारिकायाम् आजादस्य परामर्शेनैव सरदारभगतसिंह: बटुकेश्वरदत्तश्च विधानसभाभवने बमविस्फोटमकुरुताम्। तस्मिन् समये चन्द्रशेखरोऽपि विधानसभाभवनाद् बहि: मोटरयानमादायोपस्थित: आसीत्। परं भगतसिंह: बटुकेश्वरदत्तश्च विधानसभाभवने एव आत्मसमर्पणं कृतवन्तौ। पश्चात् तौ द्वावपि शूलमारोपितौ। एवम् आजादस्य अनेके सहयोगिन: भगवतीचरणसालिकरामप्रभृतयो मृता:। अत: आजादश्चन्द्रशेखरो नितरां खिन्नो जात:, केन्द्रियक्रान्तिकारिदलस्य सदस्ययो: यशपालवीरभद्रयो: संदिग्धाचरणेन तु आजादो विक्षुब्धोऽभवत्। यदा दलस्य सदस्या: एव विश्वासघातिनो जाता: तदा तस्य दु:खानुभूति: स्वाभाविकी एव आसीत्। तदापि स: स्वमार्गात् विचलितो न जात:। कर्णपुरस्य वीरभद्रत्रिपाठिन: विश्वासघात एव आजादस्य कृतेऽनिष्टकारको जात:।

एकत्रिंशदधिकैकोनविंशतिशततमे (१९३१) वर्षे फरवरीमासस्य सप्तविंशतितमायां तारिकायां प्रात: नववादने प्रयागस्य अल्फ्रेड नाम्नि उद्याने एकस्य वृक्षस्याधश्छायायाम् आजाद: यशपालेन सुखदेवेन च समं वार्त्तालापं कुर्वन् उपविष्ट: आसीत्। तस्मिन्नेव समये गच्छन् वीरभद्रत्रिपाठी दृष्ट: यशपालोऽपि उत्थाय चलित:, आजाद: सुखदेवराजेन सह वार्त्तालापं कुर्वन्नेवासीत्। तदा आरक्षिण: आगत्य परितोऽवरुद्धवन्तस्तम्।

स्वकीयं सहयोगिनं कथञ्चित्तत: उद्यानात् नि:सार्य आजाद: पेस्तौलअस्त्रं संसाधितवान्। तदा विपक्षत: गुलिकावृष्टि: जाता। विपक्षत: आरक्षिणां गुलिकावृष्टिं दर्शं-दर्शं आजादस्य मन: आकुलं नाभूत्। आजादोऽपि स्वकीयेनास्त्रेणानेकान् विमुग्धान् आहतांश्चाकरोत्। यदास्त्रे एका गुलिकावशिष्टा आसीत् तदा तया स्वमेवाहन्। एवमाजादश्चन्द्रशेखरो यश:शरीरेणामरतामभजत्।

एवं विधा: अमरबलिदायिनो देशाभिमानिनो देशसंरक्षका: क्रान्तिकारिणो नवयुवान: प्रतिदिनं नोत्पद्यन्ते। तेषां जन्म युगे कदाचिदेव जायते। यतश्च एतादृशा: अमरयुवान: युगान्तरमुपस्थापयितुमेवोत्पद्यन्ते। एतेषामावश्यकतापि क्वाचित्की कदाचित्की एव भवति। एवं विधा: आजादस्य चन्द्रशेखरस्य द्रष्टार: साक्षात्कर्तार: अद्यापि जीवन्ति ये आत्मानं पावनं मन्यन्ते। भारतभूरपि धन्यैव यत्र एतादृशा आत्मबलिदायिनो शूरा: स्वकीयेन जन्मना भूमिं पावनां कृतवन्त:, शोणितेन सिञ्चितवन्तश्च।

स्वातन्त्र्यमाप्तुकामोऽयं क्रान्तिकारी दृढव्रत:।
जातोऽमरो बलेर्दानादाजादश्चन्द्रशेखर:।।

काठिन्य निवारण

राष्ट्रहिते = राष्ट्र के हित में। **अनुरक्तानाम्** = संलग्न रहनेवाले। **उद्यतानाम्** = तैयार रहनेवाले। **अग्रगण्य** = आगे रहनेवाले। **भुञ्जाना:** = भोग करते हुए। **प्रकामं** = अत्यधिक। **मूर्धन्य:** = सर्वश्रेष्ठ। **आरक्षकै:** = सिपाहियों द्वारा। **पिनद्धा** = पहनायी गयी। **वृत्यर्थं** = नौकरी के लिए। **निस्सारयामास** = निकाल दिया। **अवोचत्** = कहा। **याचस्व** = माँगो। **बलात्** = जबरदस्ती। **उरसि** = छाती पर। **कशाघातदण्डम्** = कोड़े मारने का दण्ड। **संजात:** = हुआ। **साकं** = साथ। **कर्णपुरस्य** = कानुपर के। **अध:** = नीचे। **परित:** = चारों ओर से। **अवरुद्ध=** घेर लिया। **नि:सार्य** = निकालकर।

शोणितेन = खून से। **सिञ्चितवन्तः** = सींचा। **अकार्षीत्** = किया। **अल्पीयसी** = अत्यन्त अल्प। **निगडिताः** = बेड़ियों से जकड़े हुए। **शूलमारोपिता** = सूली पर चढ़ा दिये गये। **स्वमेवाहन्** = अपने आपको ही मार डाला। **क्वाचित्की** = कहीं। **कदाचित्की** = कभी। **संसाधितवान्** = निशाना साधा (लगाया)। **उपस्थापयितुम्** = उपस्थित करने के लिए। **आत्मबलिदायिनो** = अपने आपको बलिदान करनेवाले।

अभ्यास-प्रश्न

१. निम्नलिखित अवतरणों का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए–

(क) एकदा चन्द्रशेखरः ..... संस्कृताध्ययनमकरोत्।

(ख) दैवादाजादस्य ..... सदस्यो जातः।

(ग) एवं विधा ..... मन्यन्ते।

२. 'आजादः चन्द्रशेखरः' पाठ का सारांश लिखिए।

३. चन्द्रशेखर को क्रान्तिकारी दल का सदस्य किसने बनाया था?

४. चन्द्रशेखर का जन्म कहाँ हुआ था?

५. चन्द्रशेखर के पिता का क्या नाम था?

६. न्यायाधीश को चन्द्रशेखर ने अपना घर कहाँ बताया?

७. आजाद की मृत्यु किस पार्क में हुई?

८. किसके परामर्श से भगत सिंह ने विधान सभा भवन में बम विस्फोट किया था?

९. चन्द्रशेखर के प्रारम्भिक जीवन के बारे में क्या जानते हैं?

१०. काशी विद्यापीठ में आजाद की पढ़ाई की व्यवस्था कैसे हुई?

➨ आन्तरिक मूल्यांकन

देश के स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियों की एक सूची बनाने का प्रयास करें।

●●●

पञ्चमः पाठः

भारतवर्षम्

[अतिप्राचीन काल में हमारे देश में भरत नाम के चार महापुरुष हुए। एक दशरथ पुत्र मर्यादा पुरुषोत्तम राम के छोटे भाई भरत, दूसरे हस्तिनापुर के राजा पुरुवंशीय दुष्यन्त एवं शकुन्तला के पुत्र भरत, तीसरे नाट्यशास्त्र के प्रणेता भरतमुनि और चौथे श्रीमद्भागवत में वर्णित ब्रह्मस्वरूप जड़ भरत। भागवत में कहा गया है कि जड़ भरत अज नाभि से उत्पन्न भरत हैं, जिनके नाम पर देश को भारत कहा गया। बाद में सिन्धु नदी की संज्ञा का अनुसरण करते हुए तुर्कों ने यहाँ के वासियों को हिन्दू और देश को हिन्दुस्थान नाम दिया। इसी प्रकार यूरोपीय तथा अन्य लोगों ने 'इण्डिया' नाम दिया।

इसके उत्तर दिशा में हिमालय नाम का पर्वत है जिसे पर्वतों का राजा कहा जाता है। विश्व में सबसे ऊँचे इस नगाधिराज की चोटियाँ सदा बर्फ से ढकी रहती हैं। इसी कारण इसे हिमालय कहा गया है। हिमाच्छादित यह पर्वत विधाता के द्वारा भारत के शीर्ष पर मुकुट के समान स्थापित किया गया है। इसकी घाटियों में दूर तक फैले घने जंगल उस मुकुट में जड़ित मरकत मणि की पंक्ति के समान सुशोभित होते हैं। दीर्घ काल से यह हिमालय प्रहरी के समान खड़ा होकर देश की सीमाओं की रक्षा कर रहा है।

भारत की दक्षिण दिशा में हिन्दमहासागर, पूर्व दिशा में बंगाल की खाड़ी, पश्चिम दिशा में अरबसागर विद्यमान हैं। पश्चिमोत्तर दिशा में पाकिस्तान, पूर्वोत्तर दिशा में बाँग्लादेश हैं जो पहले हमारे भारत के ही अंग थे। दक्षिण दिशा की कन्याकुमारी में तीनों सागरों का संगम भारत के चरण धोता है। हिन्दमहासागर में स्थित लक्षद्वीप और बंगाल की खाड़ी में विद्यमान अण्डमान नामक द्वीप समूह हमारे भारत के ही अभिन्न अंग हैं। समुद्र के तटीय प्रदेशों में मछली पकड़ना आज एक विशाल उद्योग बन चुका है।

प्रकृति की भारतभूमि पर कृपा है। विश्व में छह ऋतुओं की सुन्दर छटा केवल भारत में ही देखने को मिलती है। उत्तर में गंगा, यमुना, सरस्वती आदि, मध्यभारत में नर्मदा आदि, दक्षिण में गोदावरी, कृष्णा, कावेरी आदि नदियों का प्राकृतिक जल पृथ्वी की उर्वरा शक्ति को बढ़ाता है। इनके किनारों पर बसे हरिद्वार, काशी, प्रयाग, गया आदि अनेक तीर्थस्थान हैं। गंगा के तट पर लगनेवाले कुम्भ मेले में सम्पूर्ण देश के करोड़ों लोग स्नान करने के लिए आते हैं। इस प्रकार के मेले देश की वास्तविक एकता के परिचायक हैं। हिमालय के समीपवर्ती प्रदेशों में देवदारु के जंगल, समुद्री प्रदेशों में नारियल और सुपाड़ी आदि के घने जंगल हमारी भारतभूमि का शृंगार करते हैं। यही कारण है कि हमारे राष्ट्रगीत 'वन्दे मातरम्' में भारतभूमि को सुजला, सुफला और शस्यश्यामला कहा गया है।

हमारा भारत विश्व के गुरु की उपाधि से भी अलंकृत है। हमारा दर्शन और हमारी नैतिक शिक्षाएँ विदेशियों के आकर्षण का केन्द्र रही हैं। राजनीतिशास्त्र, कामशास्त्र, शल्यचिकित्सा और गणित विद्या का मूल अङ्कलेखन-प्रणाली सर्वप्रथम भारत में ही आविर्भूत हुई। भारत में जन्म लेनेवाले बौद्ध धर्म के अनुयायी विश्व में आज करोड़ों हैं। महात्मा गान्धी द्वारा उद्घोषित 'अहिंसा परमोधर्मः' आज विश्वशान्ति का अद्वितीय उपाय है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का आदर्श ही विश्व में शान्ति स्थापित कर सकता है।

हमारी प्राचीन वास्तुकला और शिल्पकला को सारा संसार विस्फारित नेत्रों से देखता है। कोणार्क और खजुराहो आदि मन्दिरों की स्थापत्य कला को देखनेवाले विदेशी पर्यटकों की संख्या अगणित है। ताजमहल, कुतुबमीनार सदृश स्मारक हमारे देश के गौरव को बढ़ाते हैं।

अद्भुत है हमारा यह देश जहाँ सत्यकाम सरीखे सत्यवादी; ध्रुव-जैसा तपस्वी बालक; अभिमन्यु-जैसा वीर किशोर; एकलव्य, उद्दालक, कौत्स-जैसे गुरुभक्त शिष्य; शिवि, मोरध्वज, कर्ण-जैसे दानवीर; युधिष्ठिर, हरिश्चन्द्र-जैसे सत्यवादी राजा; भरत और

लक्ष्मण-जैसे भाई; सीता, सावित्री और गान्धारी जैसी पत्नियाँ; दशरथ-जैसे पिता हुए हैं। मैत्रेयी, गार्गी और भारती सदृश विदुषी स्त्रियाँ; रजियासुल्ताना, दुर्गावती, लक्ष्मीबाई-जैसी वीराङ्गनाएँ; भगतसिंह, सुखदेव और चन्द्रशेखर-जैसे देशभक्त; महावीर, गौतमबुद्ध, गान्धी-जैसे महात्मा और सन्त हुए हैं। अपनी गुलामी की जंजीरों को तोड़कर हमने भूमण्डल पर अपना एक प्रतिष्ठित स्थान स्वयं बनाया है। हम सभी का यह कर्त्तव्य है कि धर्म एवं जाति को लेकर परस्पर कलह न करें अपितु, एकता और भाईचारे को अपनाकर उपलब्ध संसाधनों से अपनी भारतमाता को गौरवान्वित करने के लिए प्रयत्नशील रहें। वह तो सदैव माननीया है। कहा भी गया है–जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।]

भारतं नामास्माकं जन्मभूमिः। भरतनामानश्चत्वारो महापुरुषा अस्मिन् देशे अतिप्राचीनकाले बभूवुः। एको मर्यादापुरुषोत्तमरामचन्द्रस्यानुजो दाशरथिर्भरतः, हस्तिनापुराधीशस्य पुरुवंशीयस्य दुष्यन्तस्य सुतश्शाकुन्तलेयः द्वितीयः, अभिनयकुशलो नाट्यशास्त्रप्रणेता भरतमुनिश्च तृतीयः, श्रीमद्भागवते वर्णितो ब्रह्मस्वरूपो जडभरतश्चतुर्थः। भागवते तत्रैव प्रतिपादितमस्ति ''अजनाभं नामैतद्वर्षं भारतमिति यत् आरभ्यव्यपदिशन्ति'' तेनेदं प्रतीयते यद् जडभरतस्य नामैव अस्माकं देशस्य संज्ञा अनुसरतीति। वयं तु एवं मन्यामहे यत् सर्वदा सर्वथा च ''भायाम् तेजसि रतत्वादेव भारतमिति'' अस्माकं प्राणप्रियस्य देशस्य प्राचीनं नाम। कालान्तरे सिन्धुनदीसंज्ञामनुसृत्य मुहम्मदीयैरत्रत्यवासिनो हिन्दुनाम्ना कथिता, देशश्च हिन्दुस्थानमिति। तथैव यूरोपीयैरितरैश्च 'इण्डिया' इति नाम कृतम्।

अस्योत्तरस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयो नाम नगाधिराजो विराजते। संसारस्य पर्वतेषु उत्तुङ्गतमस्यास्य गिरेरुच्छ्रिताः शिखरमालाः सर्वदैव हिमाच्छादितास्तिष्ठन्ति तस्मादेवायं हिमालयः कथ्यते। एतानि शिखराणि देशीयानां विदेशीयानां च पर्वतारोहिणामाकर्षणकेन्द्राण्यपि वर्तन्ते। एवं विश्वस्यते यत् तुषाराच्छादितेष्वस्य प्रदेशेषु 'येति' इति जातीया केचन हिममानवा अपि प्राप्यन्ते। हिमावेष्टितोऽयमद्रिर्भारतस्य मूर्ध्नि विधिना स्थापितं सितं किरीटमिव विभाति यस्योपत्यकासु प्रसृतानि गहनानि वनानि मरकतमणिपङ्क्तीनां शोभामनुहरन्ति। एषु वनेषु निःसीमा ओषधिसम्पत् पुष्पर्द्धिश्च भवतः। बहुप्रकाराणि फलानि उत्पद्यन्ते, नानाविधा खगमृगाश्च वसन्ति। एवमनुश्रूयते यदन्तकाले सद्रौपदीकाः पाण्डवाः हिमालयमारोहन्त एव स्वर्गमाप्ताः। दीर्घकालं यावदसौ पर्वतः प्रहरीव स्थितो भारतस्य रक्षामकरोत् किन्तु अद्यत्वेतु अस्य रक्षा भारतेन करणीया आपतिता, यतो हि अस्माकं प्रतिवेशी चीनदेशः कंचिद् भूभागं स्वकीयं कृत्वा यदा कदा भारतीयसीम्न उल्लङ्घनं हिमालयस्य पारात् करोति। तदनेकत्रास्माकं शूराः सैन्ययुवानोऽत्युच्छ्रितेषु हिमाच्छादितेषु स्थानेषु दिवानिशं दृढं तिष्ठन्तो रक्षन्ति। हिमालयस्यैवोत्सेऽस्माकं गणराज्यस्य जम्मूकश्मीर-हिमाचल-सिक्किम-अरुणाचल-प्रदेशाः सन्ति। भूताननामकं भारतरक्षितं स्वतन्त्रं राज्यं भारतमित्रं संसारस्यैकमात्रं हिन्दु-राष्ट्रं नैपालराज्यं च वर्तते। अमरनाथ-वैष्णवदेवी-गंगोत्री-यमुनोत्री-केदारनाथ-बद्रीनाथादीनि नैकानि सुप्रसिद्धानि तीर्थान्यपि हिमालयस्य क्रोडे विराजन्ते। यत्र देशस्य प्रत्येक भूभागात् प्रतिवर्षं सहस्रशस्तीर्थयात्रिण आगच्छन्ति। श्रीनगर-पहलगाँव-शिमला-नैनीताल-मंसूरी-दार्जिलिङ्गादीनि मनोरमनगराण्यपि अत्रैव वर्तन्ते यत्र बहवो जनास्तपर्तुतापात् अत्रागत्य त्राणं लभन्ते।

भारतस्य दक्षिणस्यां दिशि हिन्दमहासागरः, प्राच्यां बङ्गसमुद्रः, प्रतीच्यामरबसागरश्च वर्तते। पश्चिमोत्तरदिग्भागे सम्प्रति 'पाकिस्तानः' पूर्वोत्तरस्मिंश्च 'बांगलादेशः' तिष्ठति। पूर्वमिमावप्यस्माकं भारतस्यैव भागावास्तां राजनीतिकारणाद् विदेशिनां षड्यन्त्राणामस्माकमेव एकस्य वर्गस्य कतिपयनेतृणां हठधर्मितायाश्चकारणात् पार्थक्यं सञ्जातम्। दक्षिणस्यां दिशि भारतस्य दूरतमो भूभागः 'कन्याकुमारी' नाम्ना प्रसिद्धो यत्र त्रयाणां सागराणां सङ्गमो भारतस्य चरणप्रक्षालनं कुर्वन्नतिशयपावनतां भजते।

पारेसागरं चतुर्योजनमात्रे श्रीलङ्का नामाऽस्माकं प्रतिवेशी देशो विद्यते। एतदपि न जातु विस्मरणीयं यद् हिन्दमहासागरे 'लक्षद्वीप' नामा बंग समुद्रे 'अण्डमान' नामा द्वीपसमूहश्चापि अस्माकं भारतस्यैव अविच्छिन्नौ प्रदेशौ स्तः। गुर्जर-महाराष्ट्र-कर्णाटक-केरल-तमिल-आन्ध्र-उत्कल-बङ्गराज्यानां भूमिं सागरः स्पृशति तस्मादेते तटीयप्रदेशाः कथ्यन्ते। यत्र अनेकानि महान्ति पत्तनानि विद्यन्ते येषु असंख्यजलपोतानां साहाय्येन वैदेशिकैर्विनिमेयानां पण्यानां निर्यातमायातं च क्रियते। प्राचीनकालेऽपि

भारतवर्षस्य नौपरिवहनव्यवस्था अतीव समृद्धा आसीत्। अनेकैर्द्वीपैर्देशान्तरैश्च साकं सागरमार्गेण वाणिज्यं प्रचलति स्म। एवमेव सागरतटीयजलेषु मत्स्यग्रहणव्यापारोऽधुनातनो महानुद्योग: परिणत:।

प्रकृतिदेव्या भारते महती कृपा वर्तते। षड्भि: ऋतुभिर्विराजमानम् ऋतुचक्रमत्रैव परिवर्तते। सूर्याचन्द्रमसो: प्रकाशो यथाऽत्र प्रसरति तथा संसारस्यात्यल्पेषु एव देशेषु स्यात्। सूर्यास्तस्य चन्द्रास्तस्य च सूर्यचन्द्रयो: अस्तगमन वेलाया: मनोरमाणि दृश्यानि यथा अत्र भवन्ति तथा नान्यत्र। सकलेऽपि भारते देशे नदीनां प्राकृतिकं जालं प्रसृतं येनात्रत्या भूमिरत्युर्वरा सञ्जाता। सिन्धु-वितस्ता-शतद्रु-सरस्वती-गङ्गा-यमुना-ब्रह्मपुत्रादय: सरित उत्तरभागे, चर्मण्वती नर्मदादयो मध्यभागे, गोदावरी-कावेरी-कृष्णा-पेरियारमहानद्यादयश्च दक्षिणभागे प्रवहन्ति। एतासां तटेषु हरिद्वार-प्रयाग-काशी-गयादीनि बहूनि तीर्थस्थानानि विद्यन्ते। यत्र प्रतिदिनं सहस्रशो यात्रिण: स्नानं कृत्वा धर्मं चिन्वन्ति। विशेषेष्ववसरेषु, तु कुम्भसदृशानि मेलकानि भवन्ति। यत्र देशस्य प्रतिकोणत: सहस्रशो लक्षशो जना: आगत्य सम्मिलन्ति। देशस्य वास्तविकीमेकतां च वाचं विनैव सुतरां मुखरयन्ति। भारतस्य वनानां शोभापि परमहृद्या। हिमालयेषु देवदारुवृक्षाणामुच्छ्रायो गगनं चुम्बति तर्हि सागरतटीयप्रदेशेषु नारिकेलपूगादिवृक्षाणां घना वनराजय: समुद्रजलमात्मनो दर्पणमिवाकलयन्ति। प्राकृतिकसुषमाकारणादेव कश्मीरस्तु पृथ्वीस्थ: स्वर्ग एव मन्यते। अस्माकं राष्ट्रगीते भारतस्य प्रमुखानां प्रदेशानां पर्वतानां नदीनाञ्च कीर्तनं वर्तते। अपरस्मिन् च वन्दे मातरमित्याख्ये गीते च अस्या: भुव: सुजलत्वं सुफलत्वं शस्यश्यामलत्वञ्च वर्ण्यन्ते।

अयमस्माकं भारतदेश: संसारस्य गुरुरप्युच्यते। न केवलमुपनिषदामुत्तरवेदान्तस्य चाध्यात्मिकता, श्रुतिस्मृत्यादिषु प्रतिपादितो नैतिक आचारस्तथा विविधसिद्धिप्रदाता योगाभ्यास एवाद्यत्वेऽपि विदेशीयानामाकर्षणकारणं येन तेऽधुनानेकेष्वाश्रमेष्वत्र शान्तिं मृगयमाणा: साधनां कुर्वन्ति। स्वदेशेष्वपि तथा विधान् आश्रमांश्च संस्थापयन्ति। हरे कृष्णाद्यनेकसम्प्रदायानुद्भाव्य भक्तिमार्गमवलम्बन्तेऽपि च कामार्थावित्ति पुरुषार्थद्वयेऽपि भारतस्य प्राचीनामुपलब्धिं बहु मन्यते। वात्स्यायनं चाणक्यं चानुद्धृत्य यौनविज्ञानस्य राजनीतिविज्ञानस्य चेतिहासमपि प्रारब्धुं न पारयन्ति। अनुल्लिख्य च सुश्रुतं न शल्यविज्ञानस्याविर्भावं प्रस्तोतुं शक्यते। गणितविद्यायां मूलम् अङ्कलेखनप्रणालीं सर्वप्रथमं भारते एव आविर्भूता, ततश्च भारतीयेभ्यो अरबदेशीयैरवगता। अधुनापि अङ्क 'हिन्दसा' (हिन्दात् = भारतात् आगत:) इति कथयन्ति। यूरोपीयैस्तु तत्पश्चादेवारबवासिभ्य: संख्यालेखनप्रकार: शिक्षित:। स्वास्थ्यकृते योगासनशिक्षा तु ब्रिटेनादिदेशेषु अनेकात्र माध्यमिकविद्यालयेषु प्रचलति। भारतजन्मा बौद्धधर्मोऽद्यापि कोटिभिर्विदेशीयानामनुस्रियते। महात्मा गान्धिना पुनरुद्घोषितो 'अहिंसा परमो धर्म:' अद्यापि विश्वशान्तेरद्वितीय उपाय: स्वीक्रियते किन्तु हन्त! मिथ: अविश्वसद्भि: परस्परं विभ्यद्भिस्तथोच्चैराकाङ्क्षमाणै: संसारस्य नैकैर्हठिभिर्नेतृभिस्तदनुपालने वैवश्यमनुभूयते। त्यक्तेन भुञ्जीथा इत्यार्ष सिद्धान्तमनुसृत्य 'वसुधैव कुटुम्बकमिति' आदर्श प्राप्ता जना एव विश्वशान्तिं स्थापयितुं समर्था न तु आयुधेभ्यो धावमाना: मृत्युपण्या: कुशासका: विश्वराजनेतार:।

अस्माकं प्राचीनां वास्तुकलां शिल्पकलां च दर्शं दर्शं विस्फारितनेत्राणां विकसितदेशवास्तव्यानां विस्मयचकिता वागपि न स्फुरति। खजुराहो कोणार्कादिमन्दिराणां स्थापत्यं मूर्तिकलां चावलोकयितुं लक्षशो विदेशीया: पर्यटका अत्रागच्छन्ति। मुहम्मदीयैरपि शासकैरस्मिन् क्षेत्रे यद्विहितं तदपि 'ताजमहल-कुतुबमीनारादि' रूपेण प्रतिष्ठितं भारतीयं गौरवं वर्धयति। तदपि वैदेशिकै: सविस्मयं मुहुर्मुहु: स्तूयते। ताजमहलं तु तै: संसारस्य सप्तसु आश्चर्येषु गण्यते। भारतीयमूर्तिकलायास्तु वैदेशिकास्तथा प्रशंसकास्तदर्थं तथोन्मत्ताश्च जायन्ते यल्लक्षशो रुप्यकाणां व्ययं कृत्वापि अवैधैरप्युपायैस्तास्कर्यादिभि: प्राचीना: मूर्ती: प्राप्तुं यतन्ते। अहो! प्रशंसनीया तेषां कलाप्रीति: निन्दनीया: अवैधा उपाया: दयनीया च कलाकृतिदरिद्रता।

अद्भुतोऽयं परमगरिमा देशो यत्र नचिकेता इव ज्ञानपिपासव: जाबालेयसत्यकाम इव सत्यवादिन:, ध्रुव इव तपस्विनश्च बालका:, अभिमन्युरिव शूरा: किशोरा:, एकलव्योद्बालककौत्ससदृशा गुरुभक्ता: शिष्या:, शिविमयूरध्वजकर्णप्रभृतयो दानिन:, हरिश्चन्द्रयुधिष्ठिरादय: सत्यवादिन:, भरतलक्ष्मणसदृशा: भ्रातर:, सीतासावित्रीगान्धारीसदृश्य: पत्न्य:, दशरथसदृशा: पितरश्च

बभूवुः। मैत्रेयीगार्गीभारती सदृश्यो विदुष्यो, रजियासुल्ताना-दुर्गावती-लक्ष्मीबाई सदृश्यो वीराङ्गनाः, भगतसिंहसुखदेवचन्द्रशेखरसदृशाः देशभक्ताः, महावीरगौतमबुद्धगान्धितुल्या महात्मानः सन्तश्चास्या एव भारतभुवः सन्ततयः आसन्। देशान्तरेषु धर्मस्य ग्लान्यां सत्यां क्वचिदीश्वरेण स्वकीयो दूतः प्रहितः क्वचिच्च सुतः अत्र तु स्वयं भगवानेव मानवरूपमाधायावतीर्णः।

अधुनातनेऽप्यनेहसि भारतस्य विश्वस्मिन् भूमण्डले महत्त्वपूर्णं स्थानं वर्तते। स्वकीयाः पारतन्त्र्यशृंखला विभज्यास्माभिः सर्वेषामपि पराधीनदेशानां कृते साहाय्यमुद्घोषितम्। कस्यापि देशस्य प्रभुत्वसत्ता तत्रत्यजनेषु एव निहितेति सडिण्डिमं सिद्धान्तितम्। साम्यवादिदेशानां पुञ्जिवादिदेशानाञ्च वर्गात् पृथक् स्थित्वा विकसतां नवस्वतन्त्रताणां देशानां कृते ताटस्थ्यनीतिः प्रचारिता, तेषां च पृथक् संघठनं कृतं यस्य प्रभावो विश्वराजनीत्यां स्पष्टमनुभूयते। विकसित देशानामार्थिकषड्यन्त्राणामुद्घाटनं क्रियते। श्वेताङ्गानां रङ्गभेदनीतेर्विरुद्धं जनमतं सुदृढ़ीकृतम्। भारतीयैः प्रयत्नैरेशियाऽफ्रीकामहाद्वीपीयदेशेषु यद् जागरणं जातं तेनैतेषां देशानां मानोऽपि जगति वर्धितः। आधुनिकविज्ञानौद्योगिकीयान्त्रिक्यादीनां नवज्ञानानां क्षेत्रे महान् विकासो विहितः। नैके आविष्काराश्च कृताः। कृष्युत्पादनं वर्धितम्, यत्र सूच्यपि नो निर्मीयते स्म तत्राधुना अत्याधुनिकानि यन्त्राणि निर्मीयन्ते न केवलमविकसितेभ्यो देशेभ्योऽपि तु अमेरिका-ब्रिटेन सदृशविकसितदेशेभ्योऽपि न केवलं हस्तशिल्पनिर्मितानि वस्तून्यपि तु उच्चाभियान्त्रिकीनिर्मेयाणि सूक्ष्मयन्त्राणि अपि दीयन्ते। वैज्ञानिकानां यान्त्रिकीविशेषज्ञानां च यद् बाहुल्यं सम्प्रति भारते वर्तते तत् संसारे द्वित्रिशु देशेषु भवेन्न वा। सहस्रशो विशेषज्ञा देशान्तराणि गत्वा तत्र तेषामुपचयं कुर्वन्ति। भारतीया यथा श्रमशीला न तथा अन्ये इति देशान्तरेषु प्रतिष्ठितम् तथ्यम्।

उपर्युक्तविवरणेन विदितमेतद्भवति यत् भारतस्यातीतं तथा गौरवम् अद्याप्यस्मान् विश्वस्य सम्मुखं सम्मानस्योच्चैर्वेदिकायां प्रतिष्ठापयति। किन्तु केवलमतीतगौरवं तु भविष्यन्नैव निर्मातुं शक्नोति। वर्तमानकाले उपलब्धानां मानवसंसाधनानां संपदां च सर्वोत्तम उपयोगो विधेयो येन विकासस्य गतिः प्रवर्धेत। सन्ति काश्चिद्दुर्दमाः समस्या याः कथमपि समाधेया एव। विदेशीया न वाञ्छन्ति यद् भारतं राजनीतिक्षेत्रे वित्तीयासु चोपलब्धिषु दृढ़तां गच्छेत्। अतस्ते भारतवासिषु मिथो भेदं प्रयुज्य कलहं कारयन्ति। धर्मं भाषां स्वनिवासक्षेत्रं वा अग्रे कृत्वा समस्या उत्थाप्यन्ते। पञ्चाम्बुप्रदेशे केचन् धर्मान्धा आतङ्कवादमनुसरन्ति विदेशीयैः प्रोत्साहिताः। प्रतिवर्षमनेके साम्प्रदायिककलहा जायन्ते, निरपराधाः जनाः म्रियन्ते, जनसम्पत्तिर्नश्यति देशस्य शक्तिक्षयो भवति। अतः सर्वैरपि अस्माभिः सौहार्देन मिथो वर्तितव्यम्। सर्वेषामपि धर्माणां सांस्कृतिकपरम्पराणां सामाजिकरीतीनामादरः कर्त्तव्यः। धर्मसाहसिभिश्चापि अवगन्तव्यं यद् राजनीत्या धर्मस्य संकटः सर्वथा अश्रेयस्करः। देशजीवनस्य प्रधानधारायां सम्यङ्निमज्जनमेव सर्वेषां मङ्गलम्। द्वितीया तु जनसंख्यायाः समस्या। जनसंख्या अत्यधिकवृद्धेः कारणाद् विकासस्य लाभो विलीयते। अतः परिवारकल्याणमप्यवधेयम्। एवमपि सर्वैरवधेयं यत् सार्वजनिकजीवने विशेषतो भ्रष्टाचारो रोधनीयः। अनुचितो लाभः न जातु केनापि स्पृहणीयः। तदर्थं न कश्चिदप्यनुरोद्धव्यः, प्रोत्साहनीयो वैवश्यं वोपनेयः। न कदापि तथा वर्तितव्यं यद् भारतमातुर्विरुद्धं भवेत्। सा वै अस्माकं जन्मभूमिर्यस्याः रजसि वयमाविर्भूताः। भवेन्नाम कस्यापि शवो वह्निसात् परस्य च भूमिसात् को नाम भेदः? अन्ते तु सर्वोऽपि अस्या भारतमातुरेव रजसि विलीनो भवति। तत् कोऽर्थः परस्परं कलहेन जन्मनः मातरं प्रति विद्रोहेण वा। सा तु सर्वदैव माननीया यतो हि–

''जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी''

काठिन्य निवारण

उतुङ्ग = ऊँची। **हिमाच्छादिता** = बर्फ से ढकी हुई। **विधिना** = ब्रह्मा जी द्वारा। **किरीट** = मुकुट। **प्रणेता** = निर्माता। **व्यपदिशन्ति** = पुकारते हैं। **पार्थक्यं** = अलग। **अनुसरति** = अनुसरण करते हैं। **मन्यामहे** = मानते हैं। **नगाधिराजो** = पर्वतों

का राजा। **उच्छ्रिताः** = ऊँची। **वेष्टित** = लिपटा हुआ। **प्रसृतानि** = फैली हुई। **उत्पद्यन्ते** = पैदा होते हैं। **प्रतिवेशी** = पड़ोसी। **क्रोड** = गोद में। **पत्तनानि** = अनेक नगर या बन्दरगाहें। **प्राच्या** = पूर्व दिशा में। **प्रतीच्याम्** = पश्चिम दिशा में। **सम्प्रति** = इस समय। **पण्यानाम्** = बेची हुई वस्तुओं का। **परिणतः** = बदल गया। **वितस्ता** = झेलम नदी। **चर्मण्वती** = चम्बल। **पूगादि** = सुपाड़ी आदि। **मिथः** = आपस में। **वैवश्यम्** = विवशता में। **वागपि** = वाणी भी। **यतन्ते** = प्रयत्न करते हैं। **पत्न्यः** = पत्नियाँ। **मृत्युपण्या** = मौत का व्यापार करने वाले। **सूच्यपि** = सुई भी। **गरीयसी** = महान्। **उर्वरा** = उपजाऊ भूमि। **अनुल्लिख्य** = बिना उल्लेख किये हुए। **जलपोतानां** = पानी के जहाजों की। **अनुस्रियते** = अनुसरण किया जाता है। **आकलयन्ति** = बना लेते हैं। **स्तूयते** = प्रशंसा की जाती है। **रोधनीयः** = रोकना चाहिए। **अवगन्तव्यं** = समझना चाहिए।

अभ्यास-प्रश्न

१. निम्नलिखित अवतरणों का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए–

(क) अस्माकं प्राचीनां ..... वर्धयति।

(ख) अद्भुतोऽयं ..... बभूवुः।

(ग) महात्मा गान्धिना ..... विश्वराजनेतारः।

(घ) जनसंख्याया अत्यधिकवृद्धेः ..... विलीनो भवति।

२. 'भारतवर्षम्' पाठ का सारांश हिन्दी में लिखिए।

३. किसने भारत के निवासियों को हिन्दू और देश को हिन्दुस्तान नाम दिया?

४. भारत के उत्तरी भाग में स्थित पर्वत का नाम हिमालय क्यों है?

५. हिमालय की गोद में बसे चार प्रदेशों के नाम लिखिए।

६. वह कौन-सा देश है जहाँ छह ऋतुएँ होती हैं?

७. जननी और जन्मभूमि का क्या स्थान होता है?

८. किस गीत में भारतभूमि को सुजला, सुफला और शस्यश्यामला कहा गया है?

९. हिमालय को देवतात्मा क्यों कहा गया है?

१०. भारतवर्ष की प्राकृतिक शोभा का वर्णन कीजिए।

११. विश्व में भारतवर्ष का विशेष महत्त्व किस कारण है?

१२. निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग अपने वाक्यों में कीजिए–

अस्माकं, अस्मिन्, अपि, उत्पद्यन्ते, क्रोड, आगत्य।

➨ आन्तरिक मूल्यांकन

'मेरे सपनों का भारत' शीर्षक को ध्यान में रखते हुए आप अपने विचारों को अभिव्यक्त कीजिए।

●●●

षष्ठः पाठः

परमवीरः अब्दुलहमीदः

[यह शस्यश्यामला भारतभूमि ऐसे परमधीरों, विलक्षण विद्वानों, युद्धवीरों की जननी है जिन्होंने अपने प्राणों का मोह त्यागकर मातृभूमि की रक्षा की है। उन्हीं पुराने अलौकिक गरिमावान् परमवीर देशभक्तों की श्रेणी में आधुनिक युग में जन्मे भगतसिंह, चन्द्रशेखर, रामप्रसाद आदि का नाम भी आदर के साथ लिया जाता है। देश के लिए तन-मन-धन अर्पण कर देनेवाले देशभक्तों की शृंखला की एक कड़ी वीर अब्दुल हमीद भी था, जिसने १९६५ ई० में पाकिस्तान के साथ युद्ध में अभेद्य पैटन टैंकों का मुकाबला करते हुए वीरगति प्राप्त की।

अब्दुल हमीद का जन्म १९३३ ई० में उत्तर प्रदेश के गाजीपुर मण्डल के धुमआपुर नामक ग्राम में एक अतिसाधारण मुस्लिम परिवार में हुआ था। बाल्यकाल से ही वह कुश्ती, लाठी चलाने तथा शारीरिक बल बढ़ानेवाले खेलों में बहुत रुचि लेता था। मातृभूमि की रक्षा का संकल्प लेकर अब्दुल हमीद ने १९५४ ई० में दिसम्बर मास की ७ तारीख को भारतीय सेना में प्रवेश किया। तत्पश्चात् राजस्थान के नसीराबाद सैनिक शिविर के 'ग्रेवोडियर्स रेजीमेण्टल' प्रशिक्षण केन्द्र में १४ महीनों का सैनिक प्रशिक्षण प्राप्त किया।

भारतीय सीमा पर चीन के आक्रमण के समय अब्दुल हमीद नेफा क्षेत्र में नियुक्त था। यह उसका पहला युद्ध था। सन् १९६५ में भारत-पाक युद्ध शुरू हुआ। इस युद्ध में पाकिस्तान ने अमेरिका से प्राप्त अतिशक्तिशाली दूर तक मार करनेवाले अभेद्य पैटन टैंकों से हमारे ऊपर हमला किया। हमारे पैटन टैंक पुराने होने के कारण पाकिस्तान के पैटन टैंकों का मुकाबला करने में असमर्थ थे, परन्तु हमारा हौसला और मातृभूमि की रक्षा का संकल्प आकाश की ऊँचाइयाँ छू रहा था। हमारा ध्येय था या तो कार्य पूरा करेंगे या शरीर त्याग देंगे। ऐसे अदम्य साहस और विश्वास को लेकर वीर अब्दुल हमीद ने भयावह युद्ध को गेंद के खेल के समान समझा। युद्ध क्षेत्र को खेल का मैदान और बारूदी गोलों को गेंद समझकर वह जीप में सवार होकर आगे बढ़ा। टैंकों की छाया में आगे बढ़कर हाथ से गोला फेंकते हुए अचानक सामने आ गया। टैंक पर सवार पाकिस्तानी सैनिकों ने टैंक से तीन सौ हाथ की दूरी पर जीप में सवार अब्दुल हमीद को लक्ष्य करके गोलाबारी प्रारम्भ कर दी। उसी क्षण बिजली की गति से अब्दुल हमीद ने हथगोला पाकिस्तानी टैंक पर फेंका और टैंक की धज्जियाँ उड़ गयीं। यह देखकर दूसरे पैटन टैंक ने हमला किया परन्तु परमवीर अब्दुल हमीद ने पुनः हथगोला फेंककर उसको ध्वंस कर डाला। धन्य है वह भारतवीर जिसने सुविधासम्पन्न दुश्मन को आगे नहीं बढ़ने दिया। तीसरे पैटन टैंक से फेंके गये एक गोले से अब्दुल हमीद के प्राणों का अन्त हो गया। मृत मुखमण्डल पर भी मातृभूमि की रक्षा के लिए प्राणोत्सर्ग करने का सन्तोष स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रहा था। इस परमवीर अब्दुल ने सिद्ध कर दिखाया कि अत्यन्त असुविधा में भी अपने साहस और पराक्रम से हम महान् कार्य कर सकते हैं। सैकड़ों महारथियों के बीच उसने अकेले वीरता व साहस के साथ लड़ते हुए मृत्यु को गले लगाया। भारत सरकार ने अब्दुल हमीद को उसके अदम्य साहस और वीरता के लिए परमवीर चक्र प्रदान किया। उत्तर प्रदेश शासन ने उसके परिवार की बहुत सहायता की। उसकी याद में उसके गाँव का नाम हमीदपुर कर दिया गया ताकि सभी उसके त्याग और बलिदान को हमेशा याद रखें।]

एषा शस्यश्यामला भारतभूमिर्महतां मनीषिणां, विलक्षणानां विपश्चितां, स्वप्राणेष्वप्यनासक्तानां देशभक्तानां परमधीराणां च युद्धवीराणां जननी। आस्तां तावदस्याः प्राक्तनो लोकातिक्रान्तो गरिमा। आधुनिकेऽपि काले चन्द्रशेखरभगतसिंह-रामप्रसादादिभिर्बहुभिर्युवभिरस्याः स्वातन्त्र्यस्य हेतवे: स्वजीवनमपि प्रदत्तम्, अपरैश्चानेकैस्तरुणैस्तथाधिगतां स्वतन्त्रतां परिरक्षितुं शत्रूणामभिमुखं सुदृढं संस्थाय तेषां विनाशं कुर्वद्भिः स्वप्राणा एव उत्सृष्टाः। न यौवनं परिगणितं, न कुटुम्बं चिन्तितं नाप्यायुष्यं

समीहितम्। स्मारं स्मारं तेषामभिधानमद्यापि हृदयमगाधया श्रद्धया प्लावितं सदनुभवति यद् 'गुणा: पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वय:।' तादृशां वीराणामेवान्यतम: श्रीअब्दुलहमीदो नाम य: पञ्चषष्ट्युत्तरैकोनविंशतिशततमे (१९६५) ईस्वीये संवत्सरे कसूरयुद्धे पाकिस्तानिभि: सैनिकैरभियुध्यन् असूनपि विहाय तेषां भारताभिमुखीं गतिं सम्यगुपारौत्सीत्।

अस्य वीरपुङ्गवस्य जन्म त्रयस्त्रिंशदुत्तरैकोनविंशतिशततमे (१९३३) ख्रीष्टाब्दे अस्माकं प्रदेशस्य गाजीपुरमण्डलस्य धुमआपुराह्वये ग्रामे अतिसाधारणे मुहम्मदीयकुटुम्बे जातम्। बाल्यादेवास्य मल्लविद्यायष्टिचालनादिषु शारीरिकबलोपचयाधायिनीषु क्रीडासु सहजेवाभिरुचिरासीत्। सैनिकगुणानात्मसात्कर्तुं दृढनिश्चयोऽसौ पौन: पुन्येन तथा अभ्यस्यति स्म यथा लक्ष्यवेधादिक्रीडास्वपि प्रवीण्यमुपागमत्। अक्षराभ्यासादधिकमस्मै क्रीडाभ्यासोऽरोचत तदयं चतुर्थकक्षां यावदेवाधीतवान्। श्रूयते यदेकस्यां निशि कस्यचिदुलूकस्य विरावमेवानुसृत्य लक्ष्ये प्रहरताऽनेनासौ न्यपाति तत: क्षणादेव चासौ सैनिको भूत्वा मातृभूमे रक्षणाय समकल्पत। सौभाग्यात्तस्यायं मनोरथश्चतु:पञ्चाशदुत्तरैकोनविंशतिशततमे (१९५४) वर्षे दिसम्बरमासस्य सप्तमेऽहनि पर्यपूर्यत यदासौ सेनायां प्रवेशं प्राप्तवान्। चतुर्दशमासान् यावद्, राजस्थानस्य नसीराबादसैनिकशिविरे 'ग्रेवोडियर्स रेजीमेण्टल' प्रशिक्षणकेन्द्रे सैनिकप्रशिक्षणं प्राप्य अब्दुलहमीद: पूर्णतया सैनिकोऽभवत् षड्वर्षाभ्यन्तरे च लान्सनायकपदे न्ययुज्यत वर्षमात्रेण च हवलदारपदमाप्तवान्।

भारतसीमान्ते चीनदेशस्याक्रमणकाले श्रीअब्दुलहमीदो नेफाक्षेत्रे नियुक्त: आसीत्। तत्रैवासौ युद्धस्याद्यं साक्ष्यमकरोत्। कर्त्तव्यनिष्ठाद्वितीयेन स्वेनानन्यसाधारणेनौजसा स: सैनिकाधिकारिणामविलम्बं दृष्टिमाकृष्य तूर्णमेव हृदयेषु अपि पदमधात्। मातृभूमे: कृते प्राणानपि मुञ्चतो मे चेतो न तनुकमपि व्यथिष्यते, प्रत्युत प्राप्यैव तादृशं सुयोगं परां मुदमेवापत्स्यते इति नैकधासौ स्वमित्राण्यचीकथत्। मनोनीतस्तादृशोऽवसरोऽपि नातिविलम्बेनागत:। पञ्चषष्ट्युत्तरैकोनविंशतिशततमे (१९६५) वर्षे दैवदुर्विपाकात् पाकिस्तानेन भारतवर्षे आक्रमणं कृतम्। श्रीअब्दुलहमीदश्च लवपुरसमरक्षेत्रे कसूरनाम्नि स्थले सैनिकनियोगमादिष्टो युद्धनिरत: संवृत:। पाकिस्तानं प्रति सदैव पक्षपातिना अमेरिकादेशेन पाकिस्तानायातिशक्तिशालिनो दूरमारका अभेद्यत्वेन प्रसिद्धा: पैटनटैंका: प्राचुर्येण प्रदत्ता आसन्। तच्छक्तिदृप्ता: पाकिस्तानिन: सैनिकास्तानग्रे कृत्वा भारतसैन्ये गोलकानि वर्षन्तो दुर्दान्ता दानवा नाकमिव भारतधरामधिचिकीर्षतस्तस्या: सीमसु प्रविष्टा:। तेषां प्रतिरोधाय भारतसैनिका अपि गोलकानि वर्षन्ति स्म किन्तु तेषां पुरातनाष्टैंका न तथा दुर्भेद्या दूरमारका शक्तिशालिनश्च आसन् तथापि मातृभुवं रक्षितुं मनोबलं तु आकाशं स्पृशति स्म। 'क्रियासिद्धि: साध्ये भवति महतां नोपकरणे' इति भृशं विश्वसन्तस्तेषामात्मा 'कार्यं वा साधयेयं देहं वा पातयेयम्' इति मुहुर्मुहु: शूराभ्यस्ते समये वर्तमानो 'हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्' इति भगवतो वाक्यं स्मारयन् तेषां मनसि पैटनटैंकादपि गरीयसीं दृढतामुपाबध्नात्।

तथाभूतेन दिव्योत्साहेन दीपित: श्रीहमीदस्तु नृत्यन्मृत्युना तद् भयावहं युद्धं कन्दुकक्रीडनमिव, युद्धक्षेत्रं क्रीडाक्षेत्रमिव, गोलकजातं च कन्दुकमिव मन्यमानो जीपवाहनमारूढ: पैटनटैंकानां छायायामग्रेसरन् पाकिस्तानिसैन्यमुपरोद्धुं तेषां टैंकेषु गोलकानि प्रक्षिपन् अभिमुखमागत: टैंकरक्षितैर्रिपुसैनिकैर्हमीदस्य जीपयानं शतत्रयहस्तदूरं दृष्टं तदधिलक्ष्य च महाभीषणो गोलकक्षेप: कर्तुमारब्ध: तत्क्षणमेव हमीदेन विद्युद्गत्या हस्तगोलकं प्रक्षिप्य स: टैंको विनाशित:। तद् दृष्ट्वा अपरेण पाकिस्तानटैंकेन हमीदस्योपरि आक्रमणं कृतम् किन्तु वीरोत्तमेनानेन सोऽपि हस्तगोलकेन तथैव ध्वंसं नीत:। अहो! वैचित्र्यम्, भारतवीरवरस्य तस्य शौर्यस्य येनोत्तमोपकरणा अपि शत्रवो निरुद्धा:। हस्तिशशकयोरिव झञ्झादीपयोरिव संघर्षोऽसौ प्रतिभाति स्म। परन्तु हा! हन्त! हन्त! रणशिरसि वर्तमानस्यास्य भारतवीरधौरेयस्यानुपदमेव तृतीयस्मात् पाकिस्तानटैंकात् प्रक्षिप्तेनैकेन गोलकेन प्राणान्तो जात:। मृतस्याप्यस्य वदने मातृभूमिरक्षार्थं प्राणोत्सर्गजनित: संतोष: सुतरामङ्कित आसीत्। क्षणभङ्गुरेऽस्मिन् संसारे कलेवरं तु भङ्गुरतरम्। तस्य विनिमयेन विमलकीर्तेरर्जनं न खलु पुष्कलमूल्यम्! परमवीरेणानेन नि:सन्दिग्धं प्रमाणितं यत् स्वल्पोपकरणैरेव स्वौजसा महान्ति कार्याणि यै: सम्पाद्यन्ते त एव महान्तो न तु साधनसम्पन्ना:।

एवमसौ परश्शतैर्महारथैरभिमन्युरिव बलवद्भिर्युध्यन् सखायमिवालिङ्ग्य मृत्युमितिहासपुरुषो जात:। यस्य देशस्य रजसि क्रीडित्वा तेन बाल्यम् नीतम्, यस्यान्नजलाभ्यां तस्य देह: पुष्टिमगात्, यस्य वायौ तेन सततं श्वसितम्, तं प्रति स्वकर्त्तव्यं परिपूर्य: स: कृतार्थोऽभवत्। भारतशासनेनासौ शूरशिरोमणिर्मरणोपरान्तं परमवीरचक्रेण सम्मानित:। उत्तरप्रदेशशासनेन च तस्य कुटुम्बस्य भूयसी सहायता कृता तस्य स्मृतेश्च चिरस्थायितायै तस्य ग्रामस्य नामापि हमीदपुरमिति कृतम्।

रक्षणाय जनुर्भूमेः प्राणानपि त्यजन्ति ये।
यशोदेहेन जीवन्तो मार्गमन्यान् दिशन्ति ते।।
मातृभू-पादयोर्भक्तया शिरःपुष्पसमर्पकाः।
यशः कायाः स्वयंदेवा धन्या वीरवरा नराः।।

काठिन्य निवारण

विलक्षणानां = आश्चर्यजनक। **प्रात्तनः** = पहले की। **समीहितम्** = इच्छा की। **उपारौत्सीत्** = रोक दिया। **परिरक्षितुम्** = बचाने के लिए। **प्लावितं** = भर देना। **वीर पुङ्गवस्य** = श्रेष्ठ वीर का। **मुहम्मदीय** = मुस्लिम। **यष्टिचालनादिषु** = लाठी आदि चलाने में। **साक्ष्यम्** = सामना। **आधायिनी** = धारण करनेवाली। **तूर्णमेव** = शीघ्र ही। **लवपुर** = लाहौर। **नाकम्** = स्वर्ग को। **तनुकम्** = थोड़ा। **स्मारयन्** = स्मरण करते हुए। **नृत्यन्मृत्युना** = मृत्यु का नाच। **प्रक्षिपन्** = फेंकते हुए। **विनाशितः** = नष्ट कर दिया। **विरावम्** = बोली को। **न्यपाति** = गिरा दिया। **तदधिलक्ष्य** = उसे लक्ष्य करके। **पुष्कलमूल्यम्** = अधिक मूल्यवाला। **पुष्टिमगात्** = पुष्ट हुआ। **जनुर्भूमेः** = जन्मभूमि के। **अपरेण** = दूसरे। **हस्तिशशकयोरिव** = हाथी और खरगोश के समान। **परिपूर्य** = पूरा करके। **कृतार्थ** = धन्य। **दिशन्ति** = बताते हैं। **वीरवरा** = वीरों में श्रेष्ठ।

अभ्यास-प्रश्न

१. निम्नलिखित अवतरणों का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए–
   (क) सौभाग्यात्तस्यायं .....हवलदारपदमाप्तवान्।
   (ख) भारतसीमान्ते .....युद्धनिरतः संवृतः।
   (ग) मृतस्याप्यस्य ..... साधनसम्पन्नाः।
   (घ) एवमसौ .....हमीदपुरमिति कृतम्।
२. प्रस्तुत पाठ का सारांश हिन्दी में लिखिए।
३. पैटन टैंकों का मुकाबला करते हुए किस परमवीर ने वीरगति प्राप्त की?
४. अब्दुल हमीद का जन्म कहाँ हुआ था?
५. पाकिस्तान के साथ सन् '६५ के युद्ध में अब्दुल हमीद की तैनाती किस स्थान पर थी?
६. 'क्रियासिद्धिः साध्ये भवति महतां नोपकरणे' का अर्थ स्पष्ट कीजिए।
७. पैटन टैंक किस देश में निर्मित थे?
८. अब्दुल हमीद के गाँव का नया नाम क्या है?
९. निम्नलिखित शब्दों को अपने बनाये वाक्यों में प्रयुक्त कीजिए–
   एषा, आधुनिके, अस्य, अस्माकं, सदैव, क्रियासिद्धिः।
१०. सन्धि-विच्छेद कीजिए–
   यावदेवाधीतवान्, चासौ, तत्रैवासौ, नोपकरणे, सदैव।

➨ आन्तरिक मूल्यांकन

देश की सीमा पर लगे सैनिक किस तरह की कठिनाइयों से जूझते हैं? उनके प्रति हमारे क्या उत्तरदायित्व होने चाहिए।

●●●

सप्तमः पाठः

पुण्यसलिला गङ्गा

[सगर के साठ हजार पुत्रों का उद्धार करनेवाली सुरसरि गङ्गा धरती को हरा-भरा करती अबाध गति से बह रही है। भारतीय मतानुसार गङ्गा के जल के स्पर्श तथा नाम संकीर्त्तन मात्र से मनुष्य धन्य हो जाता है। यह केवल ऐहिक सुख प्रदान करनेवाली नहीं है अपितु पारलौकिक लक्ष्य भी पूरा करती है। ऐसी मान्यता है कि मनुष्य के दैहिक, दैविक और भौतिक त्रिविध ताप इसके सम्पर्क मात्र से विनष्ट हो जाते हैं।

पुराणों के अनुसार दैवी गङ्गा स्वर्ग में रहती थी। कपिलमुनि के शाप से भस्मीभूत साठ हजार सगर पुत्रों का उद्धार करने के लिए भागीरथ के तप के प्रभाव से पृथ्वी पर अवतरित हुई और भागीरथी कहलायी। गङ्गा नाम सहज और सार्थक है क्योंकि गम् धातु से औणादिक गन् प्रत्यय और टाप् प्रत्यय करने पर निष्पन्न गङ्गा शब्द का अर्थ है सतत गमनशील। यह गङ्गा हिमालय के पत्थरों को चूर्ण करती हुई, सघन वनों के अवरोध को तोड़ती हुई, पर्वतों की गुफाओं में प्रवेश करती हुई, घाटियों, तलहटियों में द्रुतगति से विहार करती हुई, ऊँचे-नीचे पर्वतों को लाँघती हुई हरिद्वार की समतल धरती पर निर्बाध गति से बहती है। सम्पूर्ण आर्यावर्त्त को शस्य-श्यामला बनाने में गङ्गा का उपकार अनिर्वचनीय है। गङ्गा के पावन तट पर ऋषिकेश, हरिद्वार, प्रयाग, वाराणसी आदि अनेक तीर्थस्थान हैं। वाल्मीकि और भारद्वाज ऋषियों का आश्रम भी इसी के तट पर विद्यमान था। रामानुजाचार्य, तुलसी, कबीर, गुरुतेगबहादुर आदि की प्रेरणा-स्थली यही गङ्गा का पावन तट था। वैसे तो गङ्गा में हिमालय से लेकर सागर में मिलने तक कहीं भी स्नान-दान का विशेष महत्त्व है, परन्तु हरिद्वार तथा त्रिवेणी के संगम पर कुम्भ स्नान, वाराणसी के दशाश्वमेध घाट पर स्नान के अनन्तर काशी विश्वनाथ के दर्शन का सुख कुछ पुण्यशाली लोगों को ही मिलता है। इन तीर्थस्थानों पर देश-देशान्तर से आये हुए धनी-निर्धन, सामान्य-विशिष्ट सभी एक घाट पर स्नान-पूजन करते हैं। हमारे भारत की राष्ट्रीय एकता, अखण्डता और भारतीय संस्कृति के इस अलौकिक समाजवाद को देखकर विदेशी आश्चर्यचकित रह जाते हैं।

गङ्गा का जल स्वच्छ, शीतल, तृषाशामक, रुचिवर्द्धक, सुस्वादु और रोगशामक है। यह वैज्ञानिक विश्लेषणों के द्वारा भी प्रमाणित किया जा चुका है। परन्तु दुर्भाग्य है कि आज मनुष्य स्वयं गङ्गाजल की पवित्रता और स्वच्छता को नष्ट करने में लगा है। गङ्गा के तटों पर स्थापित औद्योगिक इकाइयों से निकला रासायनिक द्रव, शहरों का मलिन जल, घातक रोगों से पीड़ित मनुष्यों तथा पशुओं के शवों को गङ्गा में प्रवाहित कर सर्वकल्याणकारी गङ्गा को प्रदूषित कर रहे हैं। कैसी विडम्बना है कि अमृत सदृश जल में हम स्वयं विष घोल रहे हैं। सौभाग्य से भारतीय शासन द्वारा गङ्गा के प्रदूषण की रोकथाम के लिए एक विशाल परियोजना प्रारम्भ की गयी है। परन्तु जब सभी का मनसा-वाचा-कर्मणा पूर्ण निष्ठा के साथ सक्रिय सहयोग होगा तभी गङ्गा की निर्मलता की रक्षा हो सकेगी।]

गङ्गायाः न केवलं भारतवर्षे अपितु निखिलविश्वस्य नदीषु महत्त्वपूर्णं स्थानं वर्तते। इयं खलु भारतीयप्राणिनां जीवनप्रदा सुखशान्तिसमृद्धविधायिनी च नदीति नास्ति सन्देहकणिकावलेशः। यतो हि भारतीयानां मतानुसारमियं न केवलमैहिकानि सुखान्येव वितरति परञ्च पारलौकिकं लक्ष्यमपि पूरयति। सुरधुन्यामस्यामवगाहनेन जलस्पर्शेन अथ च नामसंकीर्त्तनमात्रेण मानवो धन्यो जायते। ''गङ्गा तारयति वै पुंसां दृष्टा, पीताऽवगाहिता'' इति श्रद्धाभावनया मुमुक्षुः गङ्गातीरमाश्रित्य सर्वदास्याः कृपामीहते। सत्यम्, मनुजस्य दैहिकदैविकभौतिकतापत्रयमस्याः सम्पर्कमात्रेण विनश्यति। तथा चोक्तम्–

''गङ्गां पश्यति यः स्तौति स्नाति भक्त्या पिबेज्जलम्।
स स्वर्गज्ञानममलं योगं मोक्षं च विन्दति।।''

सुरधुनीयम् आदौ हिमवतः स्थानद्वयात् निःसृता। धारैका भारतस्योत्तराखण्डे उत्तरकाशीजनपदे गोमुखात् प्रसूता भागीरथी। द्वितीया 'चमोली' जनपदे अलकापुर्यां हिमप्रस्रवणात् निर्गतालकनन्देति विदिता। गङ्गोत्रीभागीरथ्योः उद्गमस्थले विस्तृता सुरम्या वनस्थली प्रथिता। देवप्रयागे भागीरथ्यलकनन्दयोः सङ्गमानन्तरं संयुक्ताधारा 'गङ्गा' इति लोके प्रसिद्धा। वेदपुराणादीनां मतेन पुरा 'देवी' रूपा गङ्गा स्वर्गे एव वसति स्म। द्रवीभूता च सा विधातुः कमण्डलौ संस्थिता। कपिलमुनिशापेन भस्मीभूतषष्टिसहस्रसगरपुत्रान् समुद्धर्तुं भगीरथस्य तपःप्रभावेन वसुन्धरामानीता लोके 'भागीरथी' इति नाम्ना ख्याता। भगवतः विष्णोः पदनखोद्भूता अतः विष्णुनदी इति ज्ञाता। भगीरथस्य वर्त्मानुसरन्तीयं गिरिगह्वरकाननननगरग्रामान् प्लावयन्ती महामुनेः जह्नोः यज्ञस्थलीं प्लावयितुमारभत। सञ्जातक्रोधः मुनिः निखिलं जलप्रवाहं क्षणमात्रेणापिबत्। भग्नमनोरथः नृपः रुष्टं महामुनिं प्रसादयितुं प्रायतत्। देवानामृषीणां तस्याराधनेन च विगतक्रोधो महात्मा कर्णरन्ध्राभ्यामशेषमुदकं निष्कास्य वसुन्धरायां पातयामास, अतएव जाह्नवीति प्रसिद्धा।

गङ्गेति नाम सहजं सार्थकञ्च। गम् धातोः औणादिक गन् प्रत्यये सति स्त्रीत्वात् टापि 'गङ्गा' शब्दो निष्पद्यते। अतः सततगमनशीलत्वात् 'गङ्गा' इति नाम सर्वथाऽन्वर्थः।

इयञ्च गङ्गा हिमालयस्य दुर्लङ्घ्यप्रस्तरखण्डानि चूर्णयन्ती सघनवनानामवरोधं त्रोटयन्ती, गिरिगह्वरेषु प्रविशन्ति उपत्यकाधित्यकासु द्रुतगत्या विहरन्ती नतोन्नतपर्वतप्रदेशान् लङ्घयन्ती हरिद्वारे समतलप्रदेशे निर्बाधतया प्रवहति। आर्यावर्त्तस्य धरित्रीं शस्यश्यामलां निर्मातुं गङ्गायाः उपकारः अनिर्वचनीयः।

वस्तुतः देहः अन्नमयः कोषः कृषिश्चान्नस्य मूलम्। कृषिप्रधाने भारत देशे गङ्गा कृषिभूमिं सिञ्चन्ती अन्नोत्पादने यावत् साहाय्यं वितरति तावन्नान्या कापि सरित्। अस्याः क्षेत्रे समुत्पन्नानां वनस्पतीनामुपकाराः ओषधीनां लाभाश्च अनिर्वचनीयाः।

गङ्गायाः प्रकृतिमनोहरी नैसर्गिकी च शोभा सर्वेषां चित्तमाह्लादयति। हृदयहारिणीमम्बुच्छटां दर्शं दर्शं मनः मुग्धं भवति। तटवर्तिनां दर्शनीयस्थानानां शोभां द्रष्टुं देशीयाः विदेशीयाश्च पर्यटकाः नित्यमिमां सेवन्ते। दिवाकरकिरणैः निशाकररश्मिभिश्च जलस्य शोभा नितरां वर्धते। गङ्गायाः कूले हरिद्वारे, प्रयागे काश्याञ्च घट्टेषु जलसौन्दर्यं मुहुर्मुहुः वीक्षमाणाः जनाः अनिर्वचनीयं सुखं शान्तिं चानुभवन्ति।

गङ्गायाः पावने कूले नैकानि तीर्थस्थानानि वर्तन्ते। तत्र बदरीनाथः, विष्णुनन्दकर्णरुद्रदेवादिपञ्चप्रयागाः, ऋषिकेशहरिद्वारगढमुक्तेश्वरतीर्थराजप्रयागवाराणसीत्यादीनि तपःपूतानि अनेकानि तीर्थस्थानानि चिरकालाद् अध्यात्मचिन्तकानृषींश्च आकर्षयन्ति। आदिकवेः वाल्मीकेः भरद्वाजर्षेश्चाश्रमौ अस्याः तीरे आस्ताम्। श्रद्धाभाजनानां रामानुज-वल्लभ-कबीर-तुलसी-प्रभृति-महापुरुषाणां गङ्गातटमेव प्रेरणास्थलम्। वन्दनीयो गुरुतेगबहादुरः अस्याः पावने पुलिने घोरं तपश्चचार। शङ्कराचार्यसंस्थापिते शृङ्गेरीमठे विघ्नेश्वराय शिवाय गङ्गोदकार्पणं महत्पुण्यमिति सर्वेऽपि श्रद्धया स्वीकुर्वन्ति।

यद्यपि आहिमालयात् सागरपर्यन्तं गङ्गाजले सर्वत्रापि स्नानं तीरे च देवाराधनयज्ञदानादिकर्माणि श्रेयस्कराणि किन्तु तीर्थस्थानेषु सम्पादितं कृत्यं तु बहुपुण्यप्रदम्। हरिद्वारे, त्रिवेण्याः सङ्गमे च कुम्भस्नानं वाराणस्यां दशाश्वमेधघट्टे जलावगाहानन्तरं गङ्गचूडविश्वनाथस्य दर्शनं केचिद् सुकृतिन एव लभन्ते। तीर्थस्थानेषु प्रतिदिनं वेदपुराणशास्त्रादि- मानवकल्याणकारिणां ग्रन्थानामध्ययनमध्यापनं व्याख्यानं च भवन्ति। धर्मशास्त्रविषयकालापेषु सद्विचारस्य सौहार्दस्य मानवैकतायाः च आदर्शः पदे-पदे दृश्यते। देशदेशान्तरागतः सधनः निर्धनः सामान्यो विशिष्टो वा सर्वे एकस्मिन्नेव घट्टे स्नानं कुर्वन्ति। एवं विधायाः भारतीयसंस्कृतेः सभ्यतायाश्च समाजवादं विलोक्य विदेशीयाः आश्चर्यान्विताः भवन्ति। गङ्गा समस्तं भारतं राष्ट्रियैक्यस्याखण्डतायाश्च सूत्रे बद्ध्वा राष्ट्रं सुदृढीकर्तुं महतीं भूमिकां निर्वहति।

गङ्गाया: तटे नैका: विशिष्टा: ऐतिहासिकस्मरणीयाश्च घटना: सञ्जाता:। रघुवंशीया: नृपतय: निखिलविश्वविजयानन्तरं काश्यां दशाश्वमेधघट्टे अश्वमेध: यज्ञानकुर्वन्। तीर्थराजे प्रयागे आयोजिते मेलापके हर्षवर्धन: स्वपरिधानं व्यतिरिच्य सर्वसम्पदं याचेकभ्य: ददाति स्म। अस्या: क्रोडे विविधानि राज्यानि उत्कर्षस्य पराकाष्ठां सम्प्राप्य ह्रासमुपगतानि, हस्तिनापुर-कान्यकुब्ज-प्रतिष्ठानपुर-काशी-पाटलिपुत्रादीनि नगराणि राजधानीगौरवमावहन्ति स्म। ऐतिहासिकनगराणां निर्माणे विशिष्टघटनानां संघटने च गङ्गाप्रवाहस्य भूमिका नाल्पीयसी।

आधुनिककाले गङ्गातटे नानाविधानि औद्योगिककेन्द्राण्यपि वर्तन्ते। इयं विविधौद्योगिकविकासायानुकूलमवसरं संयोजयति। रेलमोटरयानाविष्कारपूर्वं नदीमार्गा: गमनागमनसाधनान्यासन्। अस्मिन् क्षेत्रेऽपि गङ्गाया: लब्धं सौविध्यमवर्णनीयम्। औद्योगिकप्रतिष्ठानानां कृते अस्या: महान् जलराशि: नित्यं प्रयुज्यते। जलप्रवाहसाहाय्येन विद्युद्धाराया: प्रचुरमुत्पादनं सम्पाद्यते येन देशस्य नवनिर्माणं जायते। बुलन्दशहरनामके जनपदे 'नरौरा' नामस्थाने गङ्गातटे एतादृशमणुशक्तिसञ्चालितविद्युद्गृहं वर्तते यत्राणुशक्तया: समुपयोग: सुतरां क्रियते।

गङ्गाजलस्य वैशिष्ट्यं वैज्ञानिकविश्लेषणेनापि प्रमाणीभूतम्। गङ्गोदकं स्वच्छं शीतलं, तृषाशामकं, रुचिवर्धकं सुस्वादु, रोगापहारि च भवति। तत्र रोगकारका: जीवाणव: अनायासेन नश्यन्तीति पाश्चात्य वैज्ञानिकैरपि गङ्गाजलपरीक्षणान्निर्विवादतया समुद्घुष्टम्। गङ्गोदकं सर्वविधं पवित्रमिति मत्वा हिन्दुगृहे लघुपात्रे आनीय समादरधिया रक्ष्यते। इदं दीर्घकालेनापि विकृतिं न लभते। मुमूर्षोरपि कण्ठे 'औषधं जाह्नवीतोयं वैद्यो नारायणो हरि:' इति मत्वा गङ्गाजलमेव दीयते। अस्या: महदुपकारमनुभवन्त: जना इमां 'गङ्गामाता' इति सम्बोधयन्ति सकलमनोरथसिद्ध्यर्थं पुष्पदीपवस्त्रादीनि समर्पयन्ति च।

हन्त! दौर्भाग्यमिदं यत् साम्प्रतं मनुष्यादेव गङ्गाजलस्य पवित्रताया भयमुपस्थितम्। स्वार्थवशादस्यां तेन बहुविकारा उत्पाद्यन्ते। तटेषु संस्थापितानामौद्योगिकप्रतिष्ठानानां रासायनिकद्रवा अस्या: जले प्रवाह्यन्ते। विपुलजनसंख्याभारमुद्वहतां नगराणां मालिन्यं प्रणालिकाभि: गङ्गायाम् प्रक्षिप्यते। घातकरोगाक्रान्तानां मानवानां पशूनाञ्च शवा: वारिधारायां निलीयन्ते। कूलेषु पवित्रमनसा श्रद्धया च निर्मितेष्वैकान्तिकमन्दिरेषु धर्मशालायाञ्च समाजविरोधीनि तत्त्वानि संगच्छन्ते। अज्ञानवशात् प्रमादाच्च मानव: सर्वकल्याणकारिणीं गङ्गां प्रदूषयति, तस्या: जलं प्रदूषयति अमृते विषं मिश्रयति च। हन्त! कीदृशीयं विडम्बना या गङ्गा सर्वशुद्धिकरी प्रख्याता सा सम्प्रति स्वशुद्धये मानवमुखमपेक्षते। मानवस्यैवायं दोषो न गङ्गाया:।

सौभाग्यात् भारतीयशासनेन गङ्गाप्रदूषणस्य विनाशाय महती योजना सञ्चालिता। केन्द्रीयविकासप्राधिकरणेन प्रदूषणमपाकर्तुं शुचिताञ्च प्रतिष्ठापयितुं योजनाबद्धं कार्यमारब्धम्। चलचित्रदूरदर्शनाकाशवाणीसमाचारपत्रादिसञ्चारमाध्यमै: गङ्गाप्रदूषणं निवारयितुं जनचेतना प्रबोध्यते। परं महानयं राष्ट्रिय: कार्यक्रम:, क्षेत्रञ्च विशालम्। स्वल्पै: जनै: शासनतन्त्रैर्वा तदनुष्ठातुं न शक्यते। तत्र आबालवृद्धानां स्त्रीपुरुषाणां सक्रियसहयोगस्य अहर्निशमावश्यकता वर्तते। यदा सर्वे जना: मनसा-वाचा-कर्मणा निष्ठया च गङ्गाया: प्रदूषणमपसारयितुं कृतसंकल्पास्तदनुरूपमेवाचरणशीलाश्च भविष्यन्ति तदैवास्या: नैर्मल्यं रक्षिष्यते। पुण्यसलिला गङ्गा जगद्धात्री भविष्यत्येव। अपरञ्च–

अहो गङ्गा जगद्धात्री स्नानपानादिभिर्जगत् ।
पुनाति पावनीत्येषा न कथं सेव्यते नृभिः ।।

काठिन्य निवारण

निखिल = सम्पूर्ण। **जीवनप्रदा** = जीवन देनेवाली। **अवगाहनेन** = स्नान करने से। **मुमुक्षुः** = मोक्ष चाहनेवाला। **मुहुर्मुहुः** = बार-बार। **वीक्षमाणाः** = देखता हुआ। **ईहते** = चाहता है। **स्तौति** = प्रार्थना (स्तुति)। **आदौ** = प्रारम्भ में।

हिमवतः = हिमालय के। **प्रसूता** = उत्पन्न हुई। **विधातुः** = ब्रह्माजी के। **प्लावयन्ती** = डुबाती हुई। **चूर्णयन्ती** = चूर-चूर करती हुई। **उपत्यका** = घाटी। **निर्बाधतया** = बिना किसी बाधा के। **मुग्धं** = प्रसन्न। **कूले** = किनारे पर। **घट्टेषु** = घाटों पर। **तपः पूतानि** = तप से पवित्र। **पुलिने** = किनारे पर। **सुकृतिनः** = पुण्यशाली। **व्यतिरिच्य** = छोड़कर। **अपाकर्तुं** = दूर करने के लिए। **अहर्निशम्** = दिन-रात। **पुनाति** = पवित्र करती है। **मुमूर्षः** = मरणासन्न। **सुरधुनी** = गंगा। **नैसर्गिकी** = प्राकृतिक। **प्रवाह्यन्ते** = प्रवाहित किया जाता है। **प्रणालिकाभिः** = नालियों द्वारा। **प्रक्षिप्यते** = डाला जाता है।

अभ्यास-प्रश्न

१. निम्नलिखित अवतरणों का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए–
   (क) सुरधुन्याम् ..... विनश्यति।
   (ख) आधुनिककाले ..... प्रयुज्यते।
   (ग) गङ्गायाः तटे ..... ददाति स्म।
   (घ) गङ्गोदकं ..... समर्पयन्ति च।
२. प्रस्तुत पाठ का सारांश हिन्दी में लिखिए।
३. 'गङ्गा' शब्द का क्या अर्थ है?
४. भगीरथी हिमालय के किस स्थान से निकलती है?
५. गङ्गा के किनारे के चार तीर्थों के नाम लिखो।
६. 'नरौरा' किस प्रान्त में है?
७. गङ्गा के दर्शन मात्र से कौन-कौन ताप नष्ट हो जाते हैं?
८. गङ्गा का पानी कैसा है?
९. निम्नांकित शब्दों का प्रयोग अपने द्वारा निर्मित संस्कृत वाक्यों में कीजिए–
   तटे, सागरपर्यन्तं, निर्वहति, दृश्यते, श्रद्धया, मुहुर्मुहुः।

➨ आन्तरिक मूल्यांकन

गंगा की वर्तमान स्थिति पर अपने विचार लिखिए।

●●●

अष्टमः पाठः

पर्यावरणशुद्धिः

[हमारे चारों ओर का आवरण ही पर्यावरण कहलाता है। सम्पूर्ण संसार मिट्टी, पानी, हवा, वनस्पति, कीट-पतंगे, पशु-पक्षियों आदि से घिरा हुआ है। ये प्राकृतिक सम्पदाएँ जब अपने मूल रूप में रहती हैं तो पर्यावरण सन्तुलित होता है और जब किसी कारणवश इनका सन्तुलन बिगड़ता है तो पर्यावरण दूषित हो जाता है। मनुष्य ने अपनी सुविधा के लिए अनेक प्रकार के आविष्कार किये हैं और स्वार्थ तथा लोभ के कारण इन प्राकृतिक सम्पदाओं को नष्ट कर रहा है। वन हमें लकड़ियाँ, ओषधियाँ, फल-फूल आदि दैनन्दिन जीवन के लिए उपयोगी सामग्री प्रदान करता है। परन्तु लोभवश जंगलों से हरे वृक्षों को मनुष्य काट रहा है। फलतः वर्षा के जल से मिट्टी बह जाती है, पृथ्वी की उर्वरा शक्ति तो नष्ट हो ही रही है नदियाँ भी उथली होती जा रही हैं, बाढ़ का पानी आस-पास के गाँवों में पहुँचकर फसलों के साथ ही धन व जन की हानि भी करता है। वृक्षों के कटने से प्राणवायु का वायुमण्डल में प्रतिशत न्यून होता जा रहा है जो प्राकृतिक रूप से स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। हमारे पूर्वजों का कहना है कि एक वृक्ष अपने-आप में एक सम्पूर्ण प्रयोगशाला है। यह सूर्य के ताप को दूर करता है। वायु की मलिनता दूर करता है। वातावरण में आर्द्रता उत्पन्न करता है। पेड़ों से गिरे हुए पत्ते भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ाते हैं। वृक्षों की जड़ें भूमि के क्षरण को रोकती हैं। जल की वर्षा में भी वृक्ष सहायक होते हैं। ऐसे महान् उपकारी का विनाश करके मनुष्य स्वयं अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मार रहा है। कोलकाता विश्वविद्यालय में किये गये एक शोध के अनुसार एक वृक्ष अपने लगभग पचास वर्ष के जीवन में पचीस लाख से भी अधिक रुपयों का लाभ देता है। एक ओर मनुष्य वायुप्रदूषक वृक्षों को काट रहा है तो दूसरी ओर अनेक प्रकार के वायुप्रदूषण स्वयं फैला रहा है। उद्योग-धन्धों से निकलनेवाला रासायनिक धुआँ, वाहनों से निकलनेवाला धुआँ वायु को अत्यधिक प्रदूषित कर रहा है। इसे रोकने का सरल उपाय है प्रदूषणरहित संसाधनों का विकास और वृक्षारोपण का प्राचुर्य।

कोलाहल भी पर्यावरण को प्रदूषित करता है। इसकी समस्या शहरों में अत्यधिक है। वाहनों तथा उद्योगशालाओं में बढ़ते हुए यन्त्रों तथा ध्वनिविस्तारक यन्त्रों का अत्यन्त तीव्र स्वर कर्णदोष और बहरेपन को जन्म देता है। इसके निवारण के लिए यन्त्रों तथा वाहनों में ध्वनि-रोधी यन्त्रों का प्रयोग किया जाना चाहिए। ध्वनिविस्तारक यन्त्रों के अनावश्यक प्रयोग से बचना चाहिए।

पशुमांस भक्षी लोगों के द्वारा पशुओं की हत्या से अनेक प्रजातियाँ लुप्त होने के कगार तक पहुँच गयी हैं। 'जीव जीवस्य भोजनम्' यह प्रकृति का स्वाभाविक नियम है, जिसमें पक्षी कीट-पतङ्गों को खाते हैं, हिंसक पशु घास खानेवाले पशुओं का भक्षण करते हैं। इस प्रकार प्रकृति स्वयं अपना सन्तुलन स्थापित करती है। मनुष्य का लोभ विध्वंस को जन्म देता है।

पीने योग्य नदियों के स्वच्छ जल को भी हम स्वयं दूषित कर रहे हैं। इसकी शुद्धि जनता के सहयोग के बिना असम्भव है।

मनुष्य के द्वारा किये गये काम ही पर्यावरण को प्रदूषित कर रहे हैं। परमाणु परीक्षण से उत्पन्न अत्यधिक गर्मी वातावरण के ताप को बढ़ाती है जो मनुष्य के प्राणों के लिए घातक है।

यदि निष्कर्ष रूप में कहें तो वनस्पतियाँ ही मानव की रक्षा करने में समर्थ हैं। स्वस्थ जीवन के लिए परमावश्यक प्राणवायु का एकमात्र प्राकृतिक स्रोत वनस्पतियाँ ही हैं। अतः मनुष्य को अपने कल्याण के लिए अधिकाधिक वृक्ष लगाना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति को संकल्प लेना चाहिए कि वह एक वृक्ष लगाकर उसको बढ़ायेगा, उसकी रक्षा करेगा।]

यथान्ये प्राणिनस्तथैव मनुष्योऽपि प्रकृत्याः क्रोडे जनुरधत्त। प्रकृत्या एव तत्त्वजातं तदपि परितः आवृत्य संस्थितम्। अतः

कारणात् तत्पर्यावरणमित्युच्यते। मनुष्येण स्वबुद्धया: प्रभावेण जीवनमुन्नेतुं प्रयतमानेन नानाविधा आविष्कारा: कृता:। बहुविधं सौविध्यं सौकर्यं चाधिगतं किन्तु विकासस्य प्रक्रियायां नैका उपलब्धी: प्राप्तवता तेन यद् हारितं तदपि अन्यूनम्। मृत्स्ना-जल-वायु-वनस्पति-खग-मृग-कीट-पतङ्ग-जीवाणव इति पर्यावरणस्य घटका विद्यन्ते। विकासहेतवे क्षिप्रकारिणा मानवेन तान् प्रति विहितेनातिचारेण प्राकृतिकपर्यावरणस्य सन्तुलनमेव नितरां दोलितम्।

सर्वाधिकोऽत्ययस्तु वनस्पतीनां जात:। एकपदे एव बहुलाभलोभी मानवो वनानि चर्कर्तितुं तथा प्रवृत्तो यदधुना वनानां सुमहान् भाग उच्छिन्न:। वनेभ्यो मनुष्य: काष्ठम्, औषधी:, फलानि, पुष्पाणि एवंविधानि बहूनि वस्तूनि दैनन्दिनजीवनोपयोगीनि प्राप्नोति किन्तु काष्ठस्य लोभाद् असंख्या हरिता वृक्षा कर्तिता:। मन्ये पर्वतानां पक्षा एव छिन्ना:। येन तेषां मृत्स्ना वर्षाजलेन बलात् प्रवाह्यापनीयते। पर्वतप्रदेशीयभूप्रदेशानामुर्वरत्वं तु विनश्यत्येव भूस्खलनेन केदारा अपि लुप्ता भवन्ति, धनजनहानिर्भवति। ग्रामा अपि ध्वंस्यन्ते। वर्षाजलेन नीता मृत्स्ना नदीनां तलमुत्थलं करोति। येन जलप्लावनानि भवन्ति। जनाय महांस्त्रास उत्पद्यते।

एतत्तु सर्वे जानन्त्येव यत् प्राणवायुं (ऑक्सीजनेति प्रसिद्धम्) विना मनुष्य: कतिपयक्षणपर्यन्तमेव जीवितुं शक्नोति। प्राणवायोरुत्पादने वृक्षाणां महान् योग: केन विस्मर्यते। विषाक्तवायोर्विषतत्त्वं नीलकण्ठ इव स्वयं पायं पायं, मानवस्याकारणसुहृदो वृक्षास्तस्य कृते निर्मलं स्वास्थ्यकरं प्राणवायुं समुत्पादयन्ति। प्राणायामेन प्राणानां नियमनस्य योगमार्ग:, आध्यात्मिकसाधना च वनानां मध्य एवास्माकं पूर्वजैर्महर्षिभि: यद् अनुस्रियते स्म तदस्मादेव कारणात्। प्रत्येकं वृक्ष: एका महती प्रयोगशालेव भवति। एष सूर्यस्य तापं हरति, वायुमालिन्यमपनयति, वाष्पोत्सर्गेण वातावरणे आर्द्रतां जनयति, प्रतिवर्षं निजपत्राणि निपात्य उर्वरकमुत्पादयति, भूक्षरणं निरुणद्धि, जलवर्षणे कारणं च भवति। एवं स मनुजस्य महानुपकारी भवति। तथाविधमुपकारिणमपि मनुष्य उच्छेदं करोति, किन्नासौ स्वपादे एव कुठारं प्रयुनक्ति।

एको वृक्ष: स्वपञ्चाशद्वर्षजीवनकाले मानवजाते: पञ्चविंशतिलक्षरूप्यकपरिमाणाय लाभाय कल्पते, तस्मात्प्राप्तस्योर्वरकस्यैव मूल्यं पञ्चदशलक्षपरिमितं भवति, वायुशुद्धीकरणं पञ्चलक्षरूप्यकतुल्यं, प्रोटीनोत्पादनमार्द्रताजननं वर्षासाहय्यमिति त्रितयमपि पञ्चलक्षरूप्यकार्हम्। एतत्सर्वमपि कलिकाताविश्वविद्यालयीयेन डॉ० टी० एम० दासाभिधानेन वैज्ञानिकेन सुतरां विवेच्य प्रतिपादितमास्ते, तथामहिमानं तरुं निपात्य लुब्धो मानव: किं प्राप्नोति? शतं सहस्रं वा रूप्याकणां सत्यम्, अल्पस्य हेतोर्बहुहातुमिच्छन्नसौ प्रथमश्रेणीको विचारमूढ एव। पर्यावरणरक्षणापरपर्यायाय आत्मरक्षणाय मनुष्येणेयं मूढता यथासत्वरं त्यक्ता स्यात् तथैव वरम्।

एवमेकतो मनुष्यो वायुप्रदूषणनिवारकाणां वृक्षाणां हत्यां विदधाति अपरतश्च विविधै: प्रकारै: स्वयं वायुप्रदूषणस्य कारणान्युत्तरोत्तरमाविष्करोति। उद्योगशालाभ्यो निस्सृता धूमा:, खनिजाणव:, रासायनिका: लवा:, पूतिगन्धा वायवो वातावरणं दूषयन्त: प्राणवायुं विशेषतो विकारयन्ति। प्रत्यहं तैलतश्चालितवाहनानां संख्या सुरसाया मुखमिव परिवर्धते, विषमयं तैलधूममुद्गिरद्भिस्तैरपि वायुरतिशयेन विक्रियते। दूषितवायौ श्वसनाद् अस्मत्फुफ्फुसकार्यभार: प्रवर्धते, येन तत्रत्यरोगा हृदयरोगाश्च जायन्ते। अतिप्रदूषितवायो: शुद्धीकरणे पादपैरपि अत्यधिकं कार्यं करणीयं भवति तत्राक्षमत्वात्तेऽपि रुग्णा जायन्ते। वायुप्रदूषणं दुश्चक्रं निरोधातीतं गच्छति। वृक्षाणां प्राचुर्येणारोपणम्, काष्ठेङ्गालानां न्यूनतम: प्रयोग: पैट्रोल-डीजलादितैलवाहनानां स्थाने विद्युद्वाहनानामुपयोग: प्रदूषणरहितशक्तिसाधनानां विकास:, इत्येवं प्रायैरुपायैरिदमुपरोद्धं शक्यते।

कोलाहलेनापि पर्यावरणे बहवो दोषा उत्पद्यन्ते, रेलयानानां, मोटरवाहनानां, उद्योगशालासु बृहतां यन्त्राणां, यत्र-तत्र-सर्वत्र अवसरेऽनवसरे ध्वनिविस्तारकयन्त्राणां, उत्सवेषु अतिमुखरवाद्यानां च घोष:, जनसम्मर्दकलकलेन मिलितो महान् कोलाहल: संपद्यते। विशेषतो नगरेषु ध्वनिप्रदूषणं महती समस्या। अतिकोलाहलेन श्रवणदोषस्तदनु बाधिर्यं च संपद्यते। नैतावतैव मुक्ति:, मस्तिष्कदोषा अपि अनेन उत्पाद्यन्ते यच्चरमापरिणतिरुन्मादो भवति। रक्तचापरोगोऽपि पदं निदधाति येन हृदयं रुग्णं जायते। अस्या: समस्याया: समाधानार्थं ध्वनिविस्तारकयन्त्राणामनावश्यक: प्रयोगो रोधनीय:, यन्त्राणां कोलाहलो नव-नव

साइलेंसराणामाविष्कारेण उपलब्धानां च सम्यगनिवार्यप्रयोगेण परिहरणीयः। कोलाहलदोषान् जनसामान्यं संबोध्य तद्विरुद्धं जनाः प्रशिक्षणीया जनमतं च प्रवर्तितव्यम्, अत्रापि वनस्पतीनामारोपणेन, संवर्धनेन रक्षणेन च सुखकराः परिणामाः कलयितुं शक्याः। एवं खलु दृश्यते यद् वृक्षाणां द्वादशव्यामपरिणाहमिता राजयः कोलाहलस्य सघनतां प्रकामं न्यूनयन्ति। अतः सर्वत्रापि राजपथमभितः, मध्ये-मध्ये चोपनगराणां वनस्पतय आरामाश्च आरोपणीयाः।

खगमृगाणां मांसादिलोभिना मानवेन एतादृशी जाल्मता अङ्गीकृता यदधुना तेषां नैकाः प्रजातयो लुप्ता एव, वस्तुतः सर्वेऽपि पशुपक्षिणः पर्यावरणसंतुलननिर्वाहे यथायोगमुपकारका भवन्ति, सिंहव्याघ्रादयो मांसभक्षकाः हरिणादीनां वृद्धिं परिसीमयन्ति। आशीविषाजगरादयो मूषकशशकादीनां भक्षणेन कृषिकराणां सुहृद एव। पक्षिणो बीजानां विकिरणं कुर्वन्ति, कीटपतङ्गादयः पुष्पाणां प्रजननक्रियायां सहायका भवन्ति येन फलानि बीजानि चोत्पद्यन्ते। पशुपक्षिणां पुरीषेण भूमिरुर्वरा भवति येन वनस्पतीनां विकासो भवति। 'जीवो जीवस्य भोजनम्' इति प्रकृतिनियमस्यानुसारं पक्षिणः कीटपतङ्गान्, केऽपि हिंस्राः पशवश्च तृणचरान् भक्षयन्तः पर्यावरणसंतुलनं स्वत एव विदधति, तत्र मनुष्यकृतो लोभप्रवर्तितो हस्तक्षेपो विकारमेवोत्पादयति, स्वैरं वधो विध्वंसमेव जनयति।

मनुजस्यातिचारो नात्रैव माति। जलं यद्धि जीवनायात्यावश्यकत्वाज्जीवनमेव कथ्यते तदपि मनुजस्याविवेकेन दूषितम्। गङ्गायमुनासदृशीषु स्वादुपवित्रपेयसलिलासु नदीषु तटीयतटस्थनगराणां मलमूत्रादिकं सर्वप्रकारकं मालिन्यं नदीषु निपात्यते। औद्योगिकं विषमयरसायनदूषितजलं तासु निपात्यते। नराणां पशूनां च शवास्तत्र प्रवाह्यन्ते। सर्वमेतदतिभीतिकरं प्रदूषणं कुरुते। जलं तथा विषाक्तं जायते यन्मत्स्या अपि म्रियन्ते। तथाविधं जलं मानवानां स्नान-पानादिजनितं रोगमेव प्रकुरुते। यतस्तत्र रोगकारकास्तद्वाहकाश्च जीवाणवः परमं पोषमाप्नुवन्ति। सौभाग्येन संप्रति शासनेन गङ्गाप्रदूषणनिवारकं प्राधिकरणं घटितं। एष खलु प्रारम्भ एव। अन्यासां नदीनां शोधनाय जलोपलब्धेरन्यान्यपि साधनानि विशोधयितुं च लोकस्य रुचिरुत्साहनीया। जनतायाः स्वयं साहाय्येन विना न अभीप्सितं प्राप्तुं शक्यते।

मानवस्य विविधक्रियाभिरुत्पन्नस्तापोऽपि पर्यावरणं दूषयति। परमाणुपरीक्षणैर्महती तापविकृतिर्निष्पाद्यतेऽन्ये च मानवप्राणहरा दोषा उत्पाद्यन्ते। उद्योगशालानां तापोऽपि वातावरणस्य तापं वर्धयति। ग्रीष्मकाले पक्वेष्टिकासीमेंटकंक्रीट-निर्मितानि भवनानि, कार्यशालाः, राजमार्गा एवंविधानि चान्यानि लौहनिर्माणानि तापमात्मसात्कृत्य संरक्षन्ति यस्य मानवजीवनेऽस्वास्थ्यकरः प्रभावो भवति। अत्रापि वनस्पतयो मानवस्य त्राणं कर्तुं प्रभवः सन्ति। तेषां यथाप्रसरं सघनमारोपणं तापं नियमयत्येव। प्रतिव्यक्ति सार्धत्रयोदशकिलोपरिमितः प्राणवायुः स्वस्थजीवनायापेक्षते, तस्यैकमात्रं प्राकृतिकं स्रोतस्तु वनस्पतिजातम्। अतएवमेव मुहुर्मुहुरनुरुध्यते यन्मानवेनात्मकल्याणाय अधिकाधिकं वृक्षा आरोपणीयाः। समयश्च कार्यो यत्प्रत्येकं व्यक्तिरेकं वृक्षमवश्यमारोप्य वर्धयिष्यति, रक्षयिष्यत्यन्यांश्च तथाकर्तुं प्रवर्तयिष्यतीति।

काठिन्य निवारण

जनु = जन्म। **मृत्स्ना** = मिट्टी। **प्रकृत्याः** = प्रकृति की। **क्रोडे** = गोद में। **परितः** = चारों ओर से। **सौविध्यं** = सुविधा। **आवृत्य** = ढककर। **सौकर्यं** = सरलता। **घटका** = अंग। **एकपदे** = एक साथ। **चर्कर्तितुं** = बार-बार काटने के लिए। **केदारा** = खेत की मेंड़ें। **उत्पद्यते** = उत्पन्न होता है। **पायं-पायं** = पी-पीकर। **वरम्** = श्रेष्ठ। **लवाः** = अंश। **रुग्णा** = रोगी। **बाधिर्यं** = बहरापन। **रोधनीयः** = रोकना चाहिए। **राजपथ** = सड़क। **जाल्मता** = क्रूरता। **आशीविषः** = सर्प। **निपात्यते** = गिरायी जाती हैं। **विशोधयितुं** = शुद्ध करने के लिए। **पक्वेष्टिका** = पक्की ईंटें। **जीवाणवः** = जीवाणु। **चरमपरिणतिः** = अन्तिम परिणाम। **राजयः** = पंक्तियों। **आरामाः** = उद्यान। **पुरीषेण** = मल अथवा गन्दगी से। **शोधनाय** = शुद्ध करने के लिए। **तापविकृति** = ऊष्मा का विकास।

अभ्यास-प्रश्न

१. निम्नलिखित अवतरणों का हिन्दी में ससन्दर्भ अनुवाद कीजिए–

(क) एतत्तु सर्वे ..... समुत्पादयन्ति।

(ख) एको वृक्षः ..... पञ्चलक्षरूप्यकार्हम्।

(ग) कोलाहलेनापि ..... संपद्यते।

(घ) ग्रीष्मकाले ..... वनस्पतिजातम्।

२. 'पर्यावरणशुद्धिः' पाठ का सारांश लिखिए।

३. मानव की रक्षा करने में कौन समर्थ है?

४. पर्यावरण के घटक क्या हैं?

५. वृक्ष के तीन कार्य लिखिए।

६. पर्यावरण क्या है?

७. दो प्रदूषणों के नाम लिखिए।

८. ध्वनि प्रदूषण सर्वाधिक कहाँ होता है?

९. पर्यावरण में फैलते प्रदूषण के कारणों पर प्रकाश डालिए।

१०. निम्नांकित शब्दों का प्रयोग संस्कृत वाक्यों में कीजिए–

क्रोडे, भवन्ति, ध्वनिप्रदूषणं, वस्तुतः, जलं, तथैव, वरम्।

११. निम्नांकित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए–

चाधिगतं, नैका, जीवनोपयोगीनि, समाधानार्थं।

➨ आन्तरिक मूल्यांकन

१. पर्यावरण की शुद्धि के लिए आप क्या उपाय करना चाहेंगे?

२. आपके घर के आस-पास पर्यावरण की शुद्धि के लिए क्या उपाय किये गये हैं?

●●●

नवमः पाठः

अन्तरिक्षं विज्ञानम्

[आकाश में अनन्त नक्षत्र, पुच्छल तारे, नीहारिकाएँ, ग्रह, उपग्रह, सूर्य, चन्द्रमा, सप्तर्षि, सत्ताईस नक्षत्र, संवत्सरों की प्रवर्तक राशियाँ विलीन होकर चकाचौंध प्रकट करती हैं। सौर मण्डल में एक सूर्य, उसके नौ ग्रह और अट्ठाईस उपग्रह हैं। अनेक ग्रहकणिकाएँ, हजारों धूमकेतु और अनन्त उल्काएँ प्राप्त होती हैं। ग्रहकणिकाएँ लघु होती हैं और उल्काएँ उनसे भी लघु होती हैं। धूमकेतु ग्रहों और उपग्रहों से भिन्न होते हैं। परिमाण में छोटे ये आकाश में इधर-उधर बिखरे रहते हैं। पृथ्वी से देखने पर सूर्य थाली के आकार का प्रतीत होता है परन्तु यह पृथ्वी से तेरह लाख गुना बड़ा है। चन्द्रमा भी प्रायः सूर्य के समान ही दिखता है परन्तु पृथ्वी से भी छोटा है। तारागण पृथ्वी से अत्यधिक दूर होने के कारण छोटे दिखायी पड़ते हैं। सौर मण्डल में जितने पिण्ड हैं उनकी गति की दिशा सुनिश्चित है। वह सभी एक ही धुरी पर चक्कर लगाते हैं। जो दो-तीन उपग्रह विपरीत दिशा में चलते हैं वह भी सौर मण्डल के नियमानुसार ही चलते हैं। सूर्य पृथ्वी से लगभग ९ करोड़ तीस लाख मील दूर स्थित है। चन्द्रमा भी पृथ्वी से दो लाख मील दूर है। उत्तर दिशा में सप्तर्षि तारामण्डल हल के आकार का दिखायी पड़ता है। समीप ही ध्रुवतारा चमकता रहता है। अपशकुन का द्योतक धूमकेतु सौर परिवार का सदस्य नहीं है। १९०८ में पहला और १९१० में दूसरा धूमकेतु लोगों के द्वारा देखा गया। धूमकेतु की पूँछ अति विशाल होती है। चन्द्रमा पृथ्वी का सर्वाधिक समीपवर्ती नक्षत्र है। चन्द्रमा की कलाएँ बढ़ती और घटती रहती हैं। पृथ्वी स्वयं सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाती है और चन्द्रमा पृथ्वी के चारों ओर चक्कर लगाता है। जब चन्द्रमा सूर्य और पृथ्वी के बीच आ जाता है तब ग्रहण होता है। सूर्य का प्रकाश चन्द्रमा के जिस भाग पर पड़ता है वह भाग प्रकाशित दृष्टिगोचर होता है। इसी क्रम में बढ़ता और घटता है। अमावस्या को चन्द्रमा सूर्य और पृथ्वी के बीच में होता है। चन्द्रमा का जो आधा भाग सूर्य की ओर होता है वह भाग प्रकाशमान होता है परन्तु पृथ्वी पर अप्रकाशित वह भाग दिखता है, प्रकाशित नहीं। यह काल अमा के नाम से जाना जाता है। पूर्णिमा को पृथ्वी सूर्य और चन्द्रमा के बीच होती है, जिससे सूर्य के द्वारा प्रकाशित सम्पूर्ण चन्द्रमण्डल हम देख सकते हैं। रात्रिकाल में आकाश का विभाजन करता हुआ विशाल राजमार्ग-सा जो प्रकाश दिखायी पड़ता है वही नीहारिका के नाम से जाना जाता है।

आधुनिक वैज्ञानिक बुध, शुक्र, पृथ्वी, मङ्गल, बृहस्पति, शनि, यूरेनस (वरुण), नेपच्यून (वारुणी), प्लुटो (यम) इन नव ग्रहों का वर्णन करते हैं और भारतीय ज्योतिर्विद सूर्य, चन्द्र, मङ्गल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु और केतु इन नवग्रहों के विषय में बताते हैं। इस प्रकार अन्तरिक्ष सर्वशक्तिमान्, अनन्त तथा सीमारहित है। इसका एक-एक नक्षत्र अवर्णनीय है।]

प्रकृतेः विधाने यत्र इयं वसुन्धरा विभिन्नेषु रूपेषु बहुवर्णिकां शाटिकां परिधाय स्वकीयया विशालया नदी-वन-पर्वत-रत्न-रूपया सम्पत्त्या मानवानां मनो मोहयति, तथैव विशालमिदमन्तरिक्षं निःसीमकमनन्तं हिरण्यगर्भात्मकं चास्ति। अस्मिन्ननन्ते आकाशे अनन्तानि नक्षत्राणि, पुच्छलतागः, नीहारिकाः, ग्रहाः, उपग्रहाः, आदित्यः, चन्द्रमा, सप्तर्षयः, सप्तविंशतिनक्षत्राणि, संवत्सरप्रवर्त्तकाः राशयः विलीनाः चाकचिक्यं प्रकटयन्ति।

केवले सौरसाम्राज्ये एकः आदित्यः, तस्य नवग्रहाः अष्टविंशत्युपग्रहाः सन्ति। अनेकाः ग्रहकणिकाः, सहस्रं धूम्रकेतवः तथैव अनन्ता उल्काश्च समुपलभ्यन्ते। ग्रहकणिकाः, मंगलबृहस्पतिनक्षत्रयोरन्तराले विकीर्णाः सन्ति। ताः लघ्व्यः सन्ति, उल्काश्च ततोऽपि अतिलघ्व्यः। धूम्रकेतवः ग्रहेभ्यः उपग्रहेभ्यश्च भिन्नाः भवन्ति। ते परिमाणेन लघवः आकाशे इतस्ततः विकीर्णाः सन्ति। अल्पीयांसं प्रकाशबिन्दुं ध्रियमाणाः टिमटिमायन्ते तास्तास्ताराः। तत्र भीषणमौष्ण्यं जलाभावश्चातः प्राणिनां निवसनमसम्भवम्।

सूर्यः स्थाल्याकारः प्रतीयते परम् एवं नास्ति। अयम् पृथिव्याः त्रयोदशलक्षात्मको गुणितो अतीव महान् वेविद्यते। चन्द्रोऽपि

प्राय: सूर्य इव वीक्षते। परन्तु पृथिव्या अपि लघुरस्ति। नक्षत्राणामाकारं श्रावम् श्रावम्,पाठम् पाठम् मनोऽतीव विमुग्धतां भजते। तानि सूर्यापेक्षया अतीव महान्ति प्रतिभान्ति। परं लघूनि दृश्यन्ते, कारणमिदं यद्वस्तु यावद्दूरं भवति, तद्वस्तु तावत् लघु दृश्यते। सूर्यो यदि एकं क्षणमपि नैजमाकर्षणमवरुन्धीत्, तदा सर्वे ग्रहा: उपग्रहाश्च परस्परं संघर्षणं, परिघट्टनञ्च कुर्वाणा: स्वस्थानात् च्यवीरन्। वराकी पृथिवी तु सर्वथैव चूर्णतां गच्छेत्। इत्थमेकमपि मुहूर्तं तापं प्रकाशञ्च यदि सूर्योऽवरुन्ध्यात् तदा अस्माकं समेषां जडचेतनानां सर्वनाशो जायते। सौरसाम्राज्ये यानि पिण्डानि सन्ति तेषां गति: सुनिश्चिता, तानि एकस्यामेव दिशि गतिं प्रकुर्वते, तस्यामेव धुरि परिचलन्ति। द्वौ त्रयो वा उपग्रहा एवंविधा: सन्ति ये विपरीतां दिशं वहन्ति। ते सर्वे सौरसाम्राज्ये नियमं व्यवस्थामेवावलम्बन्ते। पृथिवीत: सूर्य: त्रिंशल्लक्षाधिकनवकोटिमीलात्मकं दूरेऽस्ति। चन्द्रोऽपि पृथिवीत: लक्षद्वयात्मके दूरे वसति।

सप्तर्षय: ध्रुवम् च

उत्तरस्यां दिशि सप्तर्षय: हलाकारं प्रतिभासन्ते। तिस्र: तारा: उपरि एकस्यां पङ्क्तौ पुच्छरूपेण, चतस्र: चतुरस्रतयाध: प्रतिभासन्ते। समीपे ध्रुवं भं भासते।

धूम्रकेतु:

अष्टाधिकैकोनविंशतितमेऽब्दे एको महान् धूम्रकेतु: रात्रेरन्तिमे प्रहरे गगने उत्तरस्यां दिशि दृष्ट:। इत्थम् द्वितीयो धूम्रकेतु: दशाधिकैकोनविंशेशततमे ख्रिष्टाब्देऽपि वीक्षितो जनै:। धूम्रकेतो: पुच्छमतिविशालमल्पीयसा वाष्पेण निर्मितं भवति। एककिलोग्रामभारात्मकं परिमाणं प्राय: भवति। धूम्रकेतु: सौरसाम्राज्यस्य परिवारो नास्ति। अयम् सौरजगत: बहिरेव इतस्तत: परिभ्रमति। यदा सौरसाम्राज्यस्य सीमानम् प्रविशति तदा सूर्य: बलादाकर्षति। यावत् न परिक्रमते तावत् मुक्तो न भवति। अयम् अतिथि: दैवयोगात् सौरसाम्राज्यमाविशति। य: शक्तिहीन: धूम्रकेतुर्भवति, स सततं परिभ्रमन्नेव तिष्ठति। कश्चन नश्यत्येव। एनमपशकुनस्यापि द्योतकं मन्यते।

उल्का:

गहने निशीथे यदा गगनमतिस्वच्छं भवति तदा एक: शराकार: विभ्राजिष्णु: चाकचिक्यं भ्रियमाण: पुञ्जीभूत: प्रकाश: सकलं नभ: द्विधा विभजन् महता वेगेन धावन् दूरं गत्वा लुप्तोऽपि भवति।

जना: लूक: त्रुटित इति कथयन्ति। तं दृष्ट्वा पञ्चपुष्पाणां नामोच्चारणेन, केचन ष्ठीवनेन अशुभनिवारणं कुर्वते। साधारणा: जना: यत् किमपि ब्रुवन्तु किन्तु नक्षत्रपतने धराया: विनाश: अवश्यम्भावी। वस्तुत: उल्का: पिण्डीभूता: इतस्तत: परिभ्रमन्ति। यदा पृथिव्या: सीमानमाश्रयन्ते, घनीभूतेन वायुमण्डलेन संघर्षणं कृत्वा निष्क्रामन्ति तदा ज्वलन्त: अग्रे प्रसरन्ति पुनश्च नश्यन्ति। कदापि अर्धज्वलनावस्थायां पतित्वा भूमिमाविशन्ति। एवंविधा: उल्का: कलिकातानगरस्य संग्रहालये संस्थापिता: सन्ति।

चन्द्रमा

चन्द्रमा पृथिव्या एव निर्गत्य गत: एवं वैज्ञानिका अपि भाषन्ते। सर्वेष्वपि नक्षत्रेषु एक: चन्द्रमा एव धराया: समीपवर्ती वर्तते। चन्द्रमस: कला: क्षीणा भवन्ति, परिवर्धन्ते। चन्द्रे कलंक: अस्ति, राहुरेनं ग्रसते इत्यादिका: वार्त्ता: प्राचीनकालत: प्रचलन्ति। अधुना सर्वा अपि गल्पीभूता जाता:। चन्द्र: पृथिवीं परित: अण्डाकारं भ्रमति। पृथिवी स्वयम् सूर्यं परित: भ्रमति। चन्द्रमास्तु पृथिवीं परित: चलति। प्राय: अष्टाविंशतितमे दिवसे परिक्रमां पूरयति। गर्तिलान् पर्वतान् कलङ्कान् कथयन्ति वैज्ञानिका:। चन्द्रस्य कलाभि: तिथीनां मासानाञ्च निर्माणं भवति। चन्द्र: सूर्यप्रकाशात् प्रकाशितो भवति। यदा चन्द्र: सूर्यपृथिव्योरन्तराले जायते, तदा ग्रहणं भवति एवं वदन्ति वैज्ञानिका:। चन्द्रोपरि सूर्यस्य प्रकाश: यस्मिन् भागे पतति स: भाग: प्रकाशित: कलारूपेण दृष्टिपथमायाति। स एव प्रकाश: तेनैव क्रमेण वर्धते, ह्रसति च।

अमावास्यायां चन्द्र: सूर्यपृथिव्यो: मध्ये भवति, चन्द्रस्य य: अर्धभाग: सूर्याभिमुखं भवति स भाग: प्रकाशमानो भवति। प्रकाशित: स भाग: पृथिव्या न दृष्टो जायते। केवल: अप्रकाशितोऽर्धभाग: पृथिवीस्थै: जनै: दृश्यते। प्रकाशाभावे चन्द्रस्य दर्शनं न जायते। अयं काल: अमानाम्नाभिधीयते।

पूर्णिमायां पृथिवी सूर्याचन्द्रमसो: मध्ये भवति। सूर्येण प्रकाशितं सकलं चन्द्रमण्डलं दृष्टिगोचरं भवति।

नीहारिका:

विशालतमानामाकाराणां वाष्पीयपदार्थानां समूहो, नीहारिका। रात्रौ आकाशं द्विधा कुर्वन् विशालो राजमार्ग इव य: प्रकाश:

मध्येऽवलोक्यते स: नीहारिका नाम्ना घुष्यते। आकाशे बहव्य: नीहारिका: भवन्ति। इमा नतावनता:, बृहदाकारा:, दीर्घवृत्ताकारा: कुण्डलिताश्च वा भवन्ति। नीहारिकाया: परिमाणं सूर्यत: दशार्वगुणितं भवति। दीर्घा नीहारिका एकं पृथक् ब्रह्माण्डं भवति। नीहारिकामध्ये अगणिता: तारा: परित: वाष्पीयपदार्था: भवन्ति। रात्रौ निर्मला गङ्गा इव दृष्टिपथमायाति। अत: आकाशगङ्गा नाम्नाभिधीयते। अस्यां दशसहस्रकोटय: गुम्फिता: परस्परमाकृष्टा: तारा: भवन्ति।

आधुनिका वैज्ञानिका: (सूर्यग्रहेषु) बुध-शुक्र-पृथ्वी-मङ्गल-बृहस्पति-शनि-यूरेनस (वरुण)-नेपच्यून (वारुणी)-प्लूटो (यम) इति नवग्रहान् वर्णयन्ति। चन्द्रं पृथिवी ग्रहं कथयन्ति। भारतीया: ज्योतिर्विद: सूर्य-चन्द्र-मङ्गल-बुध-बृहस्पति-शुक्र-शनि-राहु-केतून् नवग्रहान् निर्दिशन्ति।

एवमन्तरिक्षं विभु, अनन्तं नि:सीमात्मकं चास्ते। अत्रत्यमेकमपि नक्षत्रं वर्णनातीतमस्ति।

काठिन्य निवारण

बहुवर्णिकां = अनेक रंगोंवाली। **हिरण्यगर्भात्मकम्** = परब्रह्म के स्वरूपवाली। **ध्रियमाणा** = धारण करती हुई। **च्यवीरन्** = गिर पड़े। **ष्ठीवनेन** = थूकने से। **गल्पीभूता** = झूठी कहानी। **वसुन्धरा** = पृथ्वी। **चाकचिक्यं** = चकाचौंध। **आदित्य** = सूर्य। **औष्णयम्** = गर्मी। **स्थाल्याकार:** = थाली के आकार का। **वराकी** = बेचारी। **पुच्छरूपेण** = पूँछ के रूप में। **आविशति** = प्रवेश करता है। **द्योतक** = सूचक। **निशीथे** = रात में। **शराकार:** = तीर के समान। **लघ्व्य:** = छोटी-छोटी। **पिण्डीभूता:** = एकत्रित हुए। **गर्तिलान्** = गड्ढेदार। **घुष्यते** = कहा जाता है। **कुण्डलिता:** = गोल। **यूरेनस** = वरुण। **नेपच्यून** = वारुणी। **प्लूटो** = यम। **गुम्फिता:** = गुँथे हुए। **वीक्षिते** = देखा गया। **विभ्राजिष्णु** = चमकदार। **लूक:** = आकाश में टूटनेवाला तारा।

अभ्यास-प्रश्न

१. निम्नलिखित अवतरणों का हिन्दी में ससन्दर्भ अनुवाद कीजिए–
   (क) प्रकृते: विधाने ..... प्रकटयन्ति।
   (ख) साधारणा: जना: ..... संस्थापिता: सन्ति।
   (ग) आकाशे बहव्य: ..... तारा: भवन्ति।
   (घ) आधुनिका वैज्ञानिका: ..... निर्दिशन्ति।
२. प्रस्तुत पाठ का सारांश अपनी भाषा में लिखिए।
३. हमारे सौरमण्डल में कितने उपग्रह हैं?
४. सूर्य के कितने ग्रह हैं?
५. अपशकुन का सूचक क्या होता है?
६. उल्का किस संग्रहालय में देखा जा सकता है?
७. चन्द्रमा किसकी परिक्रमा करता है?
८. अन्तरिक्ष कैसा है?
९. निम्नांकित शब्दों का प्रयोग स्वनिर्मित संस्कृत वाक्यों में कीजिए–
   रूपेषु, प्राणिना, सौरसाम्राज्ये, पृथिव्या:, निशीथे, उल्का:।

➨ आन्तरिक मूल्यांकन

ग्रहों का हमारे जीवन में क्या महत्त्व है? ग्रहों की एक सूची बनाइए।

●●●

दशमः पाठः

भारतीय संविधानस्य निर्माता डॉ० भीमराव आम्बेडकरः

[डॉ० भीमराव आम्बेडकर का जन्म 14 अप्रैल, 1891 ई० में मध्य प्रदेश के मऊ नामक स्थान पर हुआ था। ये बाबा साहब के नाम से विख्यात हैं। ये भारतीय विधिवेत्ता, अर्थशास्त्री, राजनीतिज्ञ और समाज-सुधारक थे। इन्होंने दलित बौद्ध आन्दोलन को प्रेरित किया। दलित उत्थान के लिए अभियान चलाया। वे स्वतन्त्र भारत के प्रथम विधिमंत्री एवं भारतीय संविधान के प्रमुख शिल्पी थे। आम्बेडकर बहुमुखी प्रतिभा के छात्र थे। इन्होंने कोलम्बिया विश्वविद्यालय एवं लन्दन विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र विषय में शोध कार्य किया। इन्होंने अर्थशास्त्र और राजनीति विज्ञान के शोध कार्य में ख्याति अर्जित की। जीवन के प्रारम्भिक उत्थान काल में ये अर्थशास्त्र विषय के आचार्य (प्रोफेसर) थे। 1956 ई० में इन्होंने बौद्ध धर्म स्वीकार किया। 1990 ई० में मरणोपरान्त भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' से अलंकृत हुए।

दलितोत्थान के लिए इनका कार्य सराहनीय है। आम्बेडकर स्वयं महार जाति के थे, जो उस समय अस्पृश्य जाति मानी जाती थी। 1920 ई० में मुम्बई नगर से इन्होंने साप्ताहिक 'मूक नायक' पत्रिका का प्रकाशन कराया। इस पत्रिका के माध्यम से समाज में व्याप्त जाति विभेद को दूर करने का प्रयास किया। बाद में इन्होंने 'बहिष्कृत हितकारिणी सभा' की स्थापना की। 1936 ई० में इन्होंने 'स्वतन्त्र लेबर पार्टी' की स्थापना की। केन्द्रीय विधान सभा निर्वाचन में इन्होंने पन्द्रह स्थानों पर विजय प्राप्त की।

15 अगस्त, 1947 ई० में भारत की स्वतन्त्रता के पश्चात् कांग्रेस दल के नेतृत्व में गठित सरकार में डॉ० भीमराव आम्बेडकर देश के प्रथम विधि मंत्री बने। 21 अगस्त, 1947 ई० में डॉ० भीमराव आम्बेडकर स्वतन्त्र भारत के नवीन संविधान के अध्यक्ष नियुक्त हुए। ये समान नागरिक संहिता के पक्षधर थे। 6 दिसम्बर, 1956 ई० को इनका निधन हो गया।]

डॉ० भीमराव आम्बेडकरस्य जन्म अप्रैल मासस्य चतुर्दशदिनांके एकनवत्यधिकाष्टदशशततमे ख्रीष्टाब्दे (14 अप्रैल, 1891 ई०) वर्षेऽभवत्। अयं बाबासाहेब इति नाम्ना विख्यातो जातः। अयं भारतीयविधिवेत्ता, अर्थशास्त्री, राजनीतिज्ञः समाजसुधारकश्चासीत्। अयं दलित बौद्धान्दोलनम् अप्रेरयत् दलितोत्थानायाभियानमसंचालयत् च। सः स्वतंत्रभारतस्य प्रथमविधिमंत्री भारतीयसंविधानस्य प्रमुखवास्तुकारश्चासीत्। आम्बेडकरः विपुलप्रतिभायाः छात्रः आसीत्। सः तु कोलम्बिया विश्वविद्यालयात् लन्दनविश्वविद्यालयात् च अर्थशास्त्रविषये शोधकार्यं (डॉक्टरेट) सम्पादितवान्। स तु विधि-अर्थशास्त्र-राजनीतिविज्ञानस्य शोधकार्ये ख्यातिं लब्धवान्। जीवनस्य प्रारम्भिकोत्थानकाले सः अर्थशास्त्रविषयस्य आचार्यः (प्रोफेसरः) आसीत्। अनन्तरमधिवक्तृकार्यमप्यकरोत्। षट्पंचाशताधिकैकोनविंशतिशततमे खीष्टाब्दे (1956ई०) सः बौद्धधर्मं स्वीकृतवान्। नवत्यधिकैकोनविंशतिशततमे (1990) ख्रीष्टाब्दे भारतस्य सर्वोच्चनागरिकसम्मानेन भारतरत्नेन अलंकृतोऽयं जातः।

आम्बेडकरमहोदयस्य जन्म भारतस्य मध्यप्रदेशस्य मऊनामके स्थानेऽभवत्। सः तु रामजी मालोजी सकपालमहोदयस्य एवञ्च भीमाबाई इत्याख्याः चतुर्दशसंख्यकः पुत्रः आसीत् तस्य कुटुम्बः महाराष्ट्रीयः आसीत्। तत् तु इदानीं आंबडवे ग्रामः आधुनिक महाराष्ट्रस्य रत्नागिरिजनपदे स्थितः अस्ति। सः हिन्दू महारजात्या सम्बन्धितः आसीत्। तस्य जातिं अस्पृश्यं मन्यन्ते तत्कालीनजनाः। अस्मात् कारणात् तेन सह सामाजिक आर्थिकरूपेण अत्यधिकपंक्तिभेदः प्रचलितः आसीत्। डॉ० भीमराव अम्बेडकरस्य पूर्वजः बहुकालं यावत् ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी इत्याख्याः सेनायां कार्यरतः आसीत्। तस्य पिता भारतीयसेनायाः मऊशिविरे (छावनी) सेवायामासीत्। अत्रैव कार्येषु तल्लीनः सः सूबेदारपदवीं प्राप्तवान्। सः महाराष्ट्रीं (मराठी) आंग्लभाषायाञ्च औपचारिकशिक्षायाः उपाधिम् अलभत्। डॉ० आम्बेडकरः गौतमबुद्धस्य शिक्षायाः प्रभावितः आसीत्। स्वजातेः कारणात् सः अस्मै सामाजिकं प्रतिरोधम् असहत्। रामजी सकपालः विद्यालये स्वपुत्रस्य भीमरावस्य उपनाम सकपालस्य स्थाने अंबाडवेकर लेखितवान्। एकः देशस्त ब्राह्मणशिक्षकः कृष्णा महादेव आंबेडकरः तस्मै स्निहयति स्म। सः तस्य नाम्नः अंबाडवेकर परित्यज्य आम्बेडकर उपनाम संयोजितवान्। तस्मात् सः आंबेडकरनाम्ना विख्यातः। आम्बेडकरः अष्टनवत्यधिकाष्टादशशततमे (1898) ख्रीष्टाब्दे पुनर्विवाहोऽयं कृतवान्। गायकवाड़शासकः त्रयोदशैकोनविंशतिशततमे (1913) ख्रीष्टाब्दे संयुक्तराज्य-अमेरिकायाः कोलम्बिया विश्वविद्यालये गत्वाध्ययनाय भीमराव आम्बेडकरस्य चयनमभवत्। एतत्

कार्याय सार्द्ध एकादश (11.5) डालर इति प्रतिमासस्य छात्रवृत्तिरपि तस्मै प्रदत्तम्। न्यूयार्कनगरे आगमनस्य पश्चात् डॉ0 भीमराव आम्बेडकरः राजनीतिविज्ञानविभागस्य स्नातकाध्ययनक्रमे प्रवेशं प्राप्तम्। षोडशाधिकैकोनविंशतिशततमे ख्रीष्टाब्दे (1916 ई0) तस्य शोधायतं पी0एच0डी0 उपाधिना सम्मानितमकरोत्। सः इदं शोधं पुस्तक 'इवोल्युशन ऑफ प्रोविन्शिअल फिनान्स इन ब्रिटिश इण्डिया' एतत् रूपे प्रकाशितं कारितवान्। सः स्व पी0एच0डी0 इत्युपाधिं नीत्वा षोडशाधिकैकोनविंशतिशततमे ख्रीष्टाब्दे (1916 ई0) डॉ0 आम्बेडकरः लन्दननगरमगच्छत्। यत्र सः ग्रेज् इन एव लन्दन स्कूल ऑफ इकॉनॉमिक्स इति विषये नियमस्य (कानून) अध्ययनार्थशास्त्रे च डॉक्टरेट इत्युपाधये स्वनामोल्लेखं कारितवान्। अग्रिमवर्षे छात्रवृत्तिसमाप्तेः कारणात् सः स्वाध्ययनं परित्यज्य भारतं प्रत्यागच्छत्। प्रथमविश्वयुद्धस्य कालोऽयमासीत्। बड़ौदाराज्यस्य सेनासचिवरूपे कार्यं कुर्वन् स्वजीवने आकस्मिकमुपस्थितां समस्यां दृष्ट्वा तस्य मनो तत्र नारमत्। स्ववृत्तिकां त्यक्त्वा सः व्यक्तिगतशिक्षक—लेखाकाररूपे कार्यं कर्त्तुमारभत्। सः स्ववैदेशिकमित्रस्य पूर्व राज्यपाल लॉर्ड सिडेनम महोदयस्य कारणात् मुम्बईस्थितः 'सिडेनम कॉलेज ऑफ कॉमर्स एण्ड एकॉनोमिक्स' इति विद्यालये राजनीतिक अर्थव्यवस्थायाः आचार्यरूपे (प्रोफेसर) आजीविकां लब्धवान्। विंशत्यधिकैकोनविंशतिशततमे (1920) ख्रीष्टाब्दे कोल्हापुरनगरस्य महाराजा स्वपारसीमित्रसहायेन सः इंग्लैण्डदेशं प्रति गन्तुं समर्थोऽभवत्। त्रयोविंशत्यधिकैकोनविंशतिशततमे (1923) ख्रीष्टाब्दे सः स्वशोधं 'रूप्यकाणां समस्या (प्रोब्लेम्स ऑफ द रूपी) सम्पूरितवान्। सः लन्दनविश्वविद्यालयात् 'डॉक्टर ऑफसाइन्स' इत्युपाधिमलभत्। यदा सः नियमस्य (कानून) अध्ययनं सम्पूर्य सः 'ब्रिटिशबार' इति संस्थाने बैरिस्टररूपे प्रवेशमलभत्। भारतप्रत्यागमनकाले डॉ0 भीमराव आम्बेडकरः त्रयोमासपर्यन्तं जर्मनीदेशे स्थितः। तत्र सः अर्थशास्त्रस्याध्ययनं 'बॉन विश्व विद्यालये' कृतवान्। सः जूनमासस्य अष्टमे दिनांके सप्तविंशति अधिकैकोनविंशतिशततमे ख्रीष्टाब्दे (8 जून, 1927 ई0) कोलम्बिया विश्वविद्यालयतः पी0एच0डी0 उपाधिमलभत्।

विंशत्यधिकैकोनविंशतिशततमे ख्रीष्टाब्दे (1920 ई0) मुम्बईनगरात् सः साप्ताहिकमूकनायकपत्रिकां प्रकाशितवान्। सा पत्रिका सत्वरगत्या जनानां मनसि स्थानं स्थापितवान्। अस्याः पत्रिकायाः कार्यं सः रूढ़िवादीहिन्दूनेतॄन् जातीयविभेदं दूरीकरणमकरोत्। दलितसमाजस्यैके सम्मेलने अस्य व्याख्यानेन प्रभावितो स्थानीयशासकः शाहूः चतुर्थः आम्बेडकरमहोदयेन सह भुक्तवान्। तस्य भोजनेन रूढ़िवादीसमाजे कोलाहलमजायत्। आम्बेडकरः लब्धप्रतिष्ठः प्राड्विवाको संजातः अनन्तरं सः बहिष्कृतहितकारिणीसभां स्थापयामास, यस्योद्देश्यं दलितवर्गेषु शिक्षायाः प्रचारप्रसारं एवं तेषां कृते सामाजिक-आर्थिक उन्नतये कार्यं प्रधानमासीत्। महानुभावोऽयं अस्पृश्यतां दूरीकरणार्थं व्यापकं आन्दोलनमसञ्चालयत् तस्योद्देश्यं स्पर्शास्पर्शदूरीकरणं अस्पृश्यानां देवालयं प्रत्यागमनं तेषां पेयजलसमस्यां समाधानमाद्यासीत्। स्वल्पैव दिवसैव सः डॉ0 आम्बेडकरः प्रख्यातदलितनेता अभवत्। सः मुख्यधारायां महत्त्वपूर्णराजनीतिकदलस्य जातेः व्यवस्थायाः उन्मूलनार्थं प्रति कथितोदासीनतायाः कट्वालोचनामकरोत्। अयं ब्रिटिशशासनस्य विफलतयापि असन्तुष्टःआसीत्। सः अस्पृश्य समुदायस्य कृते पृथक् राजनीतिक परिचयस्य विचारधारां स्थापितवान्। येषु कांग्रेसस्य ब्रिटिशशासनस्य च हस्तक्षेपः न स्यात्।

अक्टूबरमासस्य त्रयोदशदिनांके पंचत्रिंशत् अधिकैकोनविंशतिशततमे ख्रीष्टाब्दे (13 अक्टूबर, 1935 ई0) अयं विधिमहाविद्यालये प्रधानाचार्यपदे नियुक्तवान्। प्रधानाचार्यरूपे अयं वर्षद्वयं कार्यामकरोत्। अस्मिन्नेव वर्षे अस्य भार्या कालकवलिता संजाता। अस्य भार्या तीर्थयात्रायै गन्तुमिच्छति स्म परञ्चायं तां नादिशत्। तस्य चिन्तनमासीत् यत् तत्र गमनं निष्फलं यत्र तस्याः सम्मानं न स्यात्। अक्टूबरमासस्य त्रयोदशदिनांकेऽयं नासिकनामके स्थाने एकस्मिन् सम्मेलने भाषणमध्ये धर्मपरिवर्तनकर्तुं मनश्चकार। सः हिन्दूधर्मं परित्यक्तुं स्वानुयायीनमप्यप्रेरयत्। षट्त्रिंशताधिकैकोनविंशतिशततमे ख्रीष्टाब्दे (1936 ई0) अयं 'स्वतन्त्र लेबर पार्टी' इति दलस्य स्थापनामकरोत्। केन्द्रीयविधानसभायाः निर्वाचने सः पंचदशस्थाने विजयं लब्धवान्। सः स्व पुस्तकं 'जातेः विनाशः' अपि अस्मिन्नेव वर्षे प्रकाशितवान् यत् न्यूयार्के लिखिते शोधपत्रस्योपरि आधारितमासीत्। भारतपाकिस्तानविभाजनकाले तस्य कथनमासीत् यत् कनाडानामके देशेऽपि साम्प्रदायिकविचारधारा सततं प्रचलति तदापि तत्र अंग्रेज-फ्रांसीसी सहैव निवसन्ति, अतः अस्मिन् देशे हिन्दू-मुस्लिमजनाः कथं न सहैव स्थातुं शक्नुवन्ति। तस्य चिन्तनमासीत् यत् देशनिर्माणस्य समाधानं अत्यन्तं दुष्करं भविष्यति। विशालजनसंख्यायाः स्थानान्तरणेन सह सीमा-विवादस्यापि समस्या स्थास्यति तस्य कथनं भारतस्य स्वतन्त्रतायाः पश्चात् हिंसा दृष्ट्वा समीचीनमेव प्रतिभाति।

अगस्तमासस्य पंचदशदिनांके सप्तचत्वारिंशत् अधिकैकोनविंशतिशततमे ख्रीष्टाब्दे (15 अगस्त, 1947 ई0) भारतस्य स्वतन्त्रतायाः पश्चात् कांग्रेसदलस्य नेतृत्वे गठितस्य सर्वकारस्य अस्तित्वे डॉ0 भीमराव आम्बेडकरः देशस्य प्रथमो विधिमंत्री संजातः। अगस्तमासस्य एकोनत्रिंशत दिनांके सप्तचत्वारिंशत अधिकैकोनविंशतिशततमे ख्रीष्टाब्दे (29 अगस्त, 1947) डॉ0 भीमराव आम्बेडकरः स्वतन्त्रभारतस्य नवीनसंविधानस्य अध्यक्षः नियुक्तोऽभवत्। अयं समाननागरिकसंहितायाः पक्षधरः आसीत्।

पंचाशत् अधिकैकोनविंशतिशततमे ख्रीष्टाब्दे (1950 ई0) अयं बौद्धधर्मं प्रत्याकर्षितोऽभूत्। बौद्धधर्मेण प्रभावितोऽयं बौद्धधर्मं स्वीकृतवान्। दिसम्बरमासस्य षट्दिनांके षट्पंचाशत् अधिकैकोनविंशतिशततमे ख्रीष्टाब्दे (6 दिसम्बर, 1956 ई0) अस्य मृत्युः अभवत्।

अयं स्वजीवने बहूनि पुस्तकानि अरचयत्।

यथा– हू वेयर शूद्राज? द बुद्धा एंड हिज धम्मा,

थाट्स ऑन पाकिस्तान, अनहिलेशन ऑफ कास्ट,
द अनटचेबल, फिलोसफी ऑफ हिन्दूइज्म,
सोशल जस्टिस एंड पॉलिटिकल सेफगार्ड्स
फार डिप्रेस्ड क्लासेज,
गाँधी एंड गांधीइज्म, इत्यादयः।

काठिन्य निवारण

ख्रीष्टाब्दे = ई० में, नाम्ना = नाम से, विख्यातो = प्रसिद्ध, विधिवेत्ता = कानून का जानकार, दलितोत्थानाय = दलितों के उत्थान के लिए, वास्तुकार = शिल्पी, विपुल = बहुत अधिक, प्रखर, स्वीकृत्वान् = स्वीकार किया, अलंकृतो = सुशोभित हुए, कुटुम्बः = परिवार, जनपदे = जिले में, अस्मात् कारणात् = इस कारण से, पंक्तिभेदः = जाति-पाँति का भेद, तल्लीनः = लगे हुए, अलभत् = प्राप्त की, परित्यज्य = छोड़कर, कृतवान् = किया, चयनमभवत् = चयन हुआ या चुने गये, आंग्लभाषा = अंग्रेजी भाषा, असहत् = सहन किया, कृतवान् = किया, प्रदत्तम् = प्रदान किया, कारितवान् = करवाया, नारमत् = नहीं रमा, नहीं लगा, सम्पूर्य = पूरा करके, भुक्तवान् = भोजन किया, देवालयं = मन्दिर, उन्मूलनार्थं = समाप्त करने के लिए, कवलिता = खत्म, लब्धवान् = प्राप्त किया, विभाजन काले = बँटवारे के समय, दुष्करं = कठिन, समीचीनमेव = उपयुक्त, संजातः = हुए, पक्षधरो = समर्थक, बहूनि = बहुत सी, अरचयत् = रचना की।

अभ्यास-प्रश्न

1. निम्नलिखित अवतरणों का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए—
   (क) डॉ० भीमराव अम्बेडकरस्य..... अलंकृतोऽयं जातः।
   (ख) अम्बेडकर महोदयस्य जन्म भारतस्य..... पी-एच०डी० उपाधिमलभत्।
   (ग) विंशत्यधिक एकोनविंशतिशत् ख्रीष्टाब्दे .....हस्तक्षेपः न स्यात्।
   (घ) अक्टूबर मासस्य त्रयोदश..... समीचीनमेव प्रतिभाति।
   (ङ) अगस्त मासस्य पंचदश .....अस्य मृत्युः अभवत्।
2. भारतीय संविधानस्य निर्माता डॉ० भीमराव अम्बेडकरः पाठ का सारांश लिखिए।
3. बाबा साहब के नाम से कौन प्रसिद्ध है?
4. भीमराव अम्बेडकर का जन्म कब और कहाँ हुआ था?
5. स्वतंत्र भारत के प्रथम विधि मंत्री कौन थे?
6. अम्बेडकर को भारत रत्न से कब अलंकृत किया गया?
7. अम्बेडकर के माता-पिता का नाम लिखिए।
8. अम्बेडकर ने किस धर्म को स्वीकार किया?
9. अम्बेडकर ने दलितों के लिए क्या कार्य किया?
10. भीमराव अम्बेडकर द्वारा लिखी गयी किन्हीं दो रचनाओं के नाम लिखिए।
11. अम्बेडकर ने किस दल का गठन किया?
12. अम्बेडकर स्वतन्त्र भारत के नवीन संविधान के अध्यक्ष कब नियुक्त हुए?
13. अम्बेडकर का निधन कब हुआ?

➡ आन्तरिक मूल्यांकन

1. दलित उत्थान के क्षेत्र में अम्बेडकर द्वारा किये गये कार्यों की एक सूची तैयार कीजिए।
2. डॉ० भीमराव अम्बेडकर द्वारा लिखी गयी पुस्तकों की सूची बनाइए।

●●●